ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

बैसाख-ज्येष्ठ संवत् नानकशाही ५५७ मई 2025 वर्ष १८ अंक ९

सरदार हरी सिंघ नलूआ

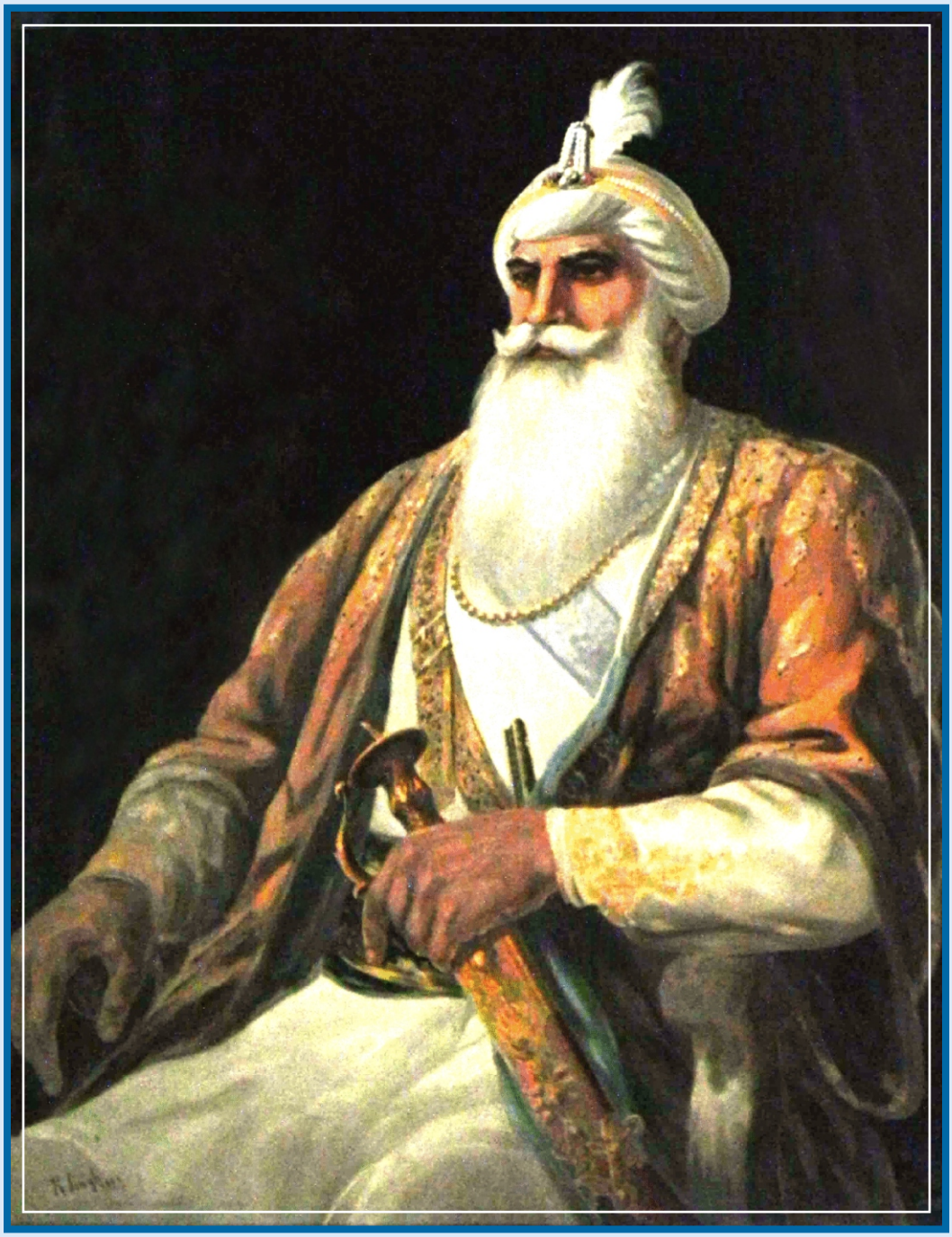

सुलतान-उल-कौम
सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया

ੴ सतिगुर प्रसादि॥
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक
गुरमत ज्ञान

बैसाख-ज्येष्ठ संवत् नानकशाही 557
वर्ष 18 अंक 9 मई 2025

संपादक : सतविंदर सिंह
सहायक संपादक : जगजीत सिंह

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै।। 7
–डॉ. मनजीत कौर
गुर अरजुन सिरि छत्रु आपि परमेसरि दीअउ ॥ 10
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के काल में सिक्ख पंथ की स्थिति 17
–डॉ. जगजीवन सिंघ
विरासत का पहरेदार : सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया 25
–स. जैतेग सिंघ अनंत
आध्यात्मिक शक्ति संपन्न योद्धा : सरदार हरी सिंघ नलूआ 27
–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
. . . सरहिंद फ़तह दिवस 31
–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब का शहीदी साका 36
–स. रणधीर सिंघ
किरत की महत्ता 39
–स. परमजीत सिंघ सुचिंतन
नशे और नौजवानों की मानसिकता 42
–डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति
ख़बरनामा 48

गुरबाणी विचार

माहु जेठु भला प्रीतमु किउ बिसरै ॥
थल तापहि सर भार सा धन बिनउ करै ॥
धन बिनउ करेदी गुण सारेदी गुण सारी प्रभ भावा ॥
साचै महलि रहै बैरागी आवण देहि त आवा ॥
निमाणी निताणी हरि बिनु किउ पावै सुख महली ॥
नानक जेठि जाणै तिसु जैसी करमि मिलै गुण गहिली ॥७॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०८)

तुखारी राग में 'बारह माहा' नामक बाणी में ज्येष्ठ मास की तीक्ष्ण गर्मी का दृश्य वर्णन करते हुए श्री गुरु नानक देव जी जीव-स्त्री की मानसिक-आत्मिक स्थिति का वर्णन करते हुए कथन करते हैं कि ज्येष्ठ का महीना अच्छा है। जीवन के इस पड़ाव पर जीव-स्त्री को उसका प्रियतम भला क्यों भूल जाए! गत मास की सुहावनी ऋतु और इस महीने की कठोरता का वर्णन करके और दोनों महीनों में प्रभु-मिलन की तीव्र इच्छा का वर्णन करके गुरु जी मनुष्य-मात्र को रहस्यमयी संकेत देते हैं कि मनुष्य-मात्र को हरेक हाल में प्रभु की मीठी याद में जीवन रूपी समय सफल करना चाहिए। भूमि सूर्य की गर्मी से ऐसे तपती है जैसे भट्ठी में अग्नि जलती है। जीव-स्त्री प्रभु-मिलन के लिए विनती करती है। वह गुण एकत्र करती है ताकि गुणों के संग्रह से प्रभु को अच्छी लगने लग जाए। संसार की माया से निर्लिप्त मेरा मन हे प्रभु! आपके सदास्थिर रहने वाले घर में रहता है अथवा रहना चाहता है, परंतु यह आपकी अनुमति, आपकी आज्ञा के बिना कदापि संभव नहीं हो सकता।

कहने से अभिप्राय यह है कि जीव-स्त्री द्वारा प्रभु-मिलन की इच्छा-मात्र ही पर्याप्त नहीं, बल्कि प्रभु की कृपा-दृष्टि की भी अत्यधिक आवश्यकता होती है।

गुरु जी आगे फरमान करते हैं कि मैं जीव-स्त्री प्रभु के बिना सम्मानहीन तथा शक्तिहीन हूं। यदि मेरा मालिक प्रभु ही मेरे पास नहीं है तो महलों में भी मुझे सुख नहीं मिल सकता। गुरु जी तत्वसार देते हुए कथन करते हैं कि जो जीव-स्त्री ज्येष्ठ माह को प्रभु-मिलन का सुअवसर समझती हुई, इस माह की ऋतु का सदुपयोग करती हुई उच्च आत्मिक व नैतिक गुणों का संग्रह कर लेती है, उसका मनुष्य-जन्म सफल हो जाता है, चूंकि वह प्रभु की कृपा-दृष्टि को प्राप्त कर लेती है।

संपादकीय

आओ! अपने लासानी इतिहास का विश्व स्तर पर प्रचार करने हेतु प्रयत्नशील बनें!

गुरु साहिबान अकाल पुरख की रज़ा के अनुसार इस जगत में से ईर्ष्या, द्वेष, ज़ब्र-जुल्म इत्यादि बदियों का खातिमा करके परोपकार, नेकी, दया, धर्म का राज्य स्थापित करने के लिए नेकी के रहबर बनकर आए। गुरु साहिबान ने हमेशा ही मानवाधिकारों, सत्य व न्याय के मार्ग को प्राथमिकता दी है। गरीब-निर्धन, असहाय, निरुपाय के लिए सहारा बन कर गुरु साहिबान ने जहां मानसिक तौर पर गुलाम जनमानस का स्तर ऊँचा उठाया, वहां धार्मिक स्तर पर आ चुकी गिरावट को भी दूर करते हुए गुरबाणी उच्चारण कर जनमानस तथा धार्मिक रहबरों को "अपना बिगारि बिरांना सांढै" वाली आदर्श जीवन-जाच के अनुसार अपना जीवन ढालने की प्रेरणा प्रदान की। श्री गुरु नानक साहिब ने बदी के खातिमे के लिए धर्म प्रचार-यात्राएं कीं एवं मानवता को बदी का सामना करने हेतु नाम-सुमिरन द्वारा बलवान चेतना के धारक बनने का उपदेश दिया। गुरु जी ने बाबर के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की। उसे जाबिर कह कर संबोधित किया ।

इसी विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने मानवता की अच्छाई और बुराई, नेकी और बदी, विनम्रता और अहंकार, धर्म और अधर्म की पहचान करवाई तथा अपने से पूर्व गुरु साहिबान की विचारधारा (गुरबाणी) को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में एकत्र कर समूची मानवता को स्वतंत्र विचारधारा प्रदान की। गुरु जी ने मानवता के सामने गुरमति का नवीनतम सिद्धांत रखा कि सर्वप्रथम जहां तक संभव हो सके शांतमयी ढंग से बदी का मुकाबला करना चाहिए । इस सिद्धांत को अमल में लाते हुए पंचम पातशाह जी ने तत्कालीन हुक्मरान जहांगीर द्वारा दिए गए असहनीय कष्ट सहन करते हुए शहादत प्राप्त की।

फिर छठम् गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने महसूस किया कि अब बदी को सख़्ती के बिना मात नहीं दी जा सकती। तब आप जी ने शस्त्रधारी होकर संत-सिपाही का स्वरूप धारण किया। जब आप जी पर हुक्मरान द्वारा चार बार फौजी आक्रमण किया तो आप जी ने उसका डट कर मुकाबला किया और विजय हासिल की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसी सिद्धांत को और

परिपक्वता से दृढ़ करवाते हुए *"चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत॥ हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत॥"* के माध्यम से कहा कि जब बदी के विरुद्ध सभी शांतमयी उपाय खत्म हो जाएं तो शस्त्र (कृपाण) उठाना ही जायज़ है। गुरु साहिबान के दरसाए मार्ग पर चलते हुए सिक्खों ने बदी के विरुद्ध शस्त्रबद्ध संघर्ष करते हुए अनेक साकों, घल्लूघारों के लासानी इतिहास की सृजना की है। गुरु साहिबान की बख़्शिश द्वारा ही सिक्खों ने अपनी दो फीसदी आबादी के बावजूद अस्सी फीसदी कुर्बानियां देकर देश को आज़ाद करवाया। सबसे ज्यादा काले पानी की सज़ा भी सिक्खों ने ही काटी। इन्हीं शहादतों के प्रसंग में इस बार मई माह में समूचा सिक्ख जगत श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी पर्व, छोटा घल्लूघारा, साका गुरुद्वारा पाउंटा साहिब और सरहिंद फतहि दिवस मना रहा है।

इस गौरवशाली इतिहास को पढ़-सुन कर अपने पूर्वजों पर फख्र होता है, जिन्होंने अत्यंत कुर्बानियों से इस लासानी इतिहास को सृजित किया।

आज ज़रूरत है गुरु साहिबान और कौम के शहीदों द्वारा सृजित, इस लासानी इतिहास को विश्व भर में प्रचारित करने की । आज सिक्खों के लासानी इतिहास और शूरवीरों की गाथाओं को इतिहास के पन्नों से आलोप करने की साज़िशें हो रही हैं । ऐसे समय में पंथ विरोधी मनसूबों को नाकाम करने के लिए समूचे नानक नाम-लेवा सिक्खों और समूची सिक्ख जत्थेबंदियों का फर्ज़ बनता है कि हम *"होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ।।"* वाली आदर्श जीवन-शैली को अपनाते हुए, मानवता के सामने आपसी भ्रातृ-भावना तथा पंथक एकता का सबूत पेश करते हुए, अपने विचित्र इतिहास और गुरमति सिद्धांतों का विश्व भर में प्रचार व प्रसार करने के लिए लामबंद हों। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के नेतृत्व में पंथ-प्रवानित सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार जीवन-यापन करते हुए उच्च आचरण के धारक बन कर अपनी पीढ़ी को गुरबाणी एवं गुरमति की अमीर विरासत के साथ जोड़ें! तभी हमारे ये शहीदी पर्व मनाने सफल होंगे और यही हमारे शहीदों को हमारी श्रद्धांजलि होगी।

भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै।।

*–डॉ. मनजीत कौर**

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का जन्म (प्रकाश) १४७९ ई. में पिता श्री तेजभान जी तथा माता सुलक्खणी जी के घर गाँव बासरके, जिला श्री अमृतसर साहिब में हुआ। सेवा एवं विनम्रता के पुंज श्री गुरु अमरदास जी बचपन से धार्मिक प्रवृत्ति के मालिक थे।

विवाह एवं संतान : आप जी का विवाह श्री देवीचंद खत्री की सुपुत्री माता मनसा देवी जी के साथ हुआ, जिन्हें माता राम कौर जी भी कहा जाता है। आपके घर दो सुपुत्र— बाबा मोहन जी तथा बाबा मोहरी जी एवं दो सुपुत्रियां— बीबी दानी जी तथा बीबी भानी जी पैदा हुईं।

गुरु-मिलाप की तीव्र अभिलाषा : आप प्रत्येक वर्ष हरिद्वार तीर्थ-यात्रा हेतु जाया करते थे। २०वें वर्ष की यात्रा के दौरान आपके जीवन में एक नवीन मोड़ आया। हुआ यूं कि यात्रा से वापिस आते समय आपकी भेंट एक साधु के संग हुई। कई दिन तक विचारों का आदान-प्रदान होता रहा। एक साथ उठना-बैठना व खाना-पीना चलता रहा। एक दिन उस साधु ने आपसे पूछा कि "आपके गुरु कौन हैं?" आपका जवाब था कि "इस विषय पर तो मैंने अब तक कोई ध्यान ही नहीं दिया।" उस साधु ने आक्रोश में आकर कहा – "मैं इतने दिन तक 'निगुरे' का संग करता रहा, मेरे तो सभी धर्म-कर्म भ्रष्ट हो गए।" इस घटना ने आपके अंदर 'गुरु' धारण करने की तीव्र अभिलाषा पैदा की।

श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शनार्थ जाना : गुरु धारण करने की प्रबल इच्छा के चलते एक दिन सबब से आपके अपने भतीजे की पत्नी बीबी अमरो जी, जो कि श्री गुरु अंगद देव जी की सुपुत्री थी, के मुख से श्री गुरु नानक देव जी की अमृतमयी बाणी श्रवण की, जिसके फलस्वरूप आपके हृदय में गुरु-दर्शनार्थ अगाध प्रेम जागृत हुआ। उसी समय आपने बीबी अमरो जी से आग्रह किया कि हमें श्री गुरु नानक देव जी की गद्दी के उत्तराधिकारी एवं द्वितीय गुरु श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शनार्थ ले चलो। उस समय आपकी आयु ५२ वर्ष थी और श्री गुरु अंगद देव जी की आयु ३६ वर्ष थी। रिश्ते के नाते आप श्री गुरु अंगद देव जी के समधी थे। रिश्तेदारी तथा आयु में वरिष्ठता होने की बाधा को दरकिनार करते हुए आप विनम्रता सहित श्री गुरु अंगद देव जी की सेवा में उपस्थित होकर उनके चरणों में

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

नत्मस्तक हो गए। आयु के इस पड़ाव पर आप जी ने गुरु जी की अनथक सेवा की। निरन्तर बारह वर्ष आप अमृत बेला में ब्यास दरिया से जल की गागर भर कर लाते और श्री गुरु अरजन देव को स्नान करवाते। फिर सारा दिन सेवा-सुमिरन में जुटे रहते।

श्री गुरु अंगद देव जी की आशीष-बखशीश : एक दिन मौसम अत्यधिक खराब था। बाबा अमरदास जी जब ब्यास दरिया से गागर भर कर ला रहे थे तो फिसलते हुए एक जुलाहे के घर के बाहर बनी उस जुलाहे की खड्डी में जा गिरे। खुद को संभालते हुए उन्होंने गागर नहीं गिरने दी। गिरने की जोरदार आहट जुलाहा दंपत्ति के कानों तक गई। जुलाहिन की प्रतिक्रिया थी कि "यह अमरू निथावां (बेसहारा) ही होगा, जिसका कोई ठौर-ठिकाना नहीं है।" यह सुनकर बाबा अमरदास जी के मुख से ये वचन निकले—"कमलीए (बावली)! मेरा गुरु दीन-दुनिया का मालिक है। मुझे उसके चरणों में स्थान मिल गया है। मैं निथावां नहीं हूं।" इतना सुनते ही वह जुलाहिन सचमुच बावली-सी हो गई। चिंतातुर जुलाहा उसे लेकर श्री गुरु अंगद देव जी की शरण में पहुँचा और क्षमा-याचना करने लगा। इस पर श्री गुरु अंगद देव जी ने बाबा अमरदास जी की ओर संकेत किया, जिसका मतलब था कि क्षमा-याचना मुझसे नहीं, बाबा अमरदास जी से करो। बाबा अमरदास जी ने उस दंपत्ति को भी सेवा-सुमिरन के रंग में रंग दिया। जुलाहिन स्वस्थ हो गई। इस दौरान बाबा अमरदास जी की झोली श्री गुरु अंगद देव जी ने आशीष-बखशीश से भर दी। बोले, "पुरखा! तुम्हारी सेवा सफल हुई है!"

गुरुआई : हर प्रकार से योग्य जान कर श्री गुरु अंगद देव जी ने बाबा अमरदास जी को खडूर साहिब में गुरुआई प्रदान की। बाबा बुड्ढा जी से सभी रस्में पूर्ण करवाकर बाबा अमरदास जी के समक्ष माथा टेका।

'गोइंदवाल' नगर बसाना एवं बाउली साहिब का निर्माण : श्री गुरु अमरदास जी ने ब्यास दरिया के किनारे 'गोइंदवाल' नामक नगर बसाया। गोइंदवाल साहिब में एक बाउली (बावली) का निर्माण करवाया, जिसमें समस्त धर्मों-वर्णों के लोग बिना किसी भेदभाव के पानी भर सकते थे तथा स्नान कर सकते थे। इस प्रकार छुआ-छूत, ऊँच-नीच तथा जातिगत भेद स्वत: ही तिरोहित हो गए।

पहले पंगत पाछे संगत : श्री गुरु अमरदास जी ने लंगर को बहुत ही दृढ़ता के साथ चलाया। उनका आदेश था कि जो भी गुरु-घर में आए वो पहले पंगत (कतार) में बैठ कर लंगर (भोजन) ग्रहण करे। केवल साधारणजन हेतु ही नहीं, अपितु समय का बादशाह अकबर भी जब गुरु जी के दर्शन हेतु आया तो उसके लिए भी यही आदेश था। उसने भी पहले पंगत में बैठ कर

लंगर छका और फिर गुरु-दर्शन कर सका। बादशाह अकबर गुरु-घर की मर्यादा से बहुत प्रभावित हुआ।

समाज-सुधार : जात-पांत, ऊँच-नीच के भेदभाव को मिटा कर गुरु जी ने लोगों को व्यर्थ के कर्मकाण्डों-आडम्बरों से बचा कर एक निराकार प्रभु के साथ जोड़ा। पुरातन प्रचलित सती-प्रथा के अनुसार, जब किसी स्त्री के पति की मृत्यु हो जाती तो उसे चिता में पति के साथ ही जिंदा जल कर मरने को मजबूर किया जाता था। गुरु जी ने सती-प्रथा को बंद करवा कर, विधवा-विवाह (पुनर्विवाह) की प्रथा प्रारंभ की। इस संदर्भ में उनकी पावन बाणी उल्लेखनीय है :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि।।
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि।। *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७८७)*

प्रचार-केंद्रों की स्थापना : आपने आध्यात्मिक प्रबंध को सुव्यवस्थित करने हेतु सिक्खों को एक लड़ी में पिरोने के उद्देश्य से बाईस मंजियां तथा बावन पीड़े स्थापित किए अर्थात् प्रचार-केंद्रों तथा उप प्रचार-केंद्रों की स्थापना की। पुरुषों के साथ-साथ स्त्रियों को भी प्रचारक नियुक्त कर गुरु जी ने स्त्री-पुरुष-समन्वय दृढ़ करवाया।

श्री गुरु अमरदास जी ने १७ रागों में अमृतमयी बाणी उच्चारण की। गुरु जी हर रोज दरबार लगाते तथा संगत को प्रवचन करते हुए उसकी आशंकाओं का सहजतापूर्वक निवारण करते। गुरु जी ने सामाजिक बुराइयों का खण्डन कर लोगों का मार्गदर्शन किया, सती-प्रथा, पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह, मृत्यु-भोज आदि कुप्रथाओं से मुक्त करवाया, जात-पांत के बंधनों से छुटकारा दिलाया।

श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी के मिशन को शिखर तक पहुंचाया तथा उनके स्वर्णिम सिद्धांतों का पालन करते हुए, पूर्णतया कसौटी पर खरे उतरने वाले भाई जेठा जी (श्री गुरु रामदास जी) को गुरुआई पर मनोनीत किया।

श्री गुरु अमरदास जी के समग्र व्यक्तित्व को समझना अति कठिन साधना है। भट्ट भल जी ने गुरु जी की उपमा करते हुए अपने हृदयोद्गारों को बड़ी सुंदर अभिव्यक्ति प्रदान की है, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सुशोभित है :

घनहर बूंद बसुअ रोमावलि
कुसम बसंत गनंत न आवै।।
रवि ससि किरणि उदरु सागर को
गंग तरंग अंतु को पावै।।
रद्र धिआन गिआन सतिगुर के
कबि जन भल्य उनह जु गावै।।
भले अमरदास गुण तेरे
तेरी उपमा तोहि बनि आवै।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३९६)

गुर अरजुन सिरि छत्रु आपि परमेसरि दीअउ ॥

*–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन साहिब के सिक्ख पंथ पर किये गये उपकार गणना और वर्णन से परे हैं। ये उपकार अकल्पनीय थे और असंभव थे। श्री गुरु अरजन साहिब ऐसा कर सके क्योंकि स्वयं परमात्मा ने अपना बल उनमें समाहित कर दिया था। उनकी राह कंटकपूर्ण थी, चुनौतियां चारों ओर से थीं। गुरु साहिब ने अपनी राह के हर कंटक को दूर किया, हर चुनौती को परास्त किया और सिक्ख पंथ को नई दिशा प्रदान की। भट्ट मथरा जी श्री गुरु अरजन साहिब के समकालीन थे। उन्होंने श्री गुरु अरजन साहिब को निकट से देखने और जानने के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि श्री गुरु अरजन साहिब की महिमा धरती और आकाश में, सभी नौ ग्रहों में व्याप्त हो रही है अर्थात् उनके उपकार समस्त ब्रह्मांड का हित करने वाले हैं। ऐसा तो केवल परमात्मा का ही प्रताप है। भट्ट मथरा जी ने कहा कि यह देखते हुए तो उन्हें परमात्मा और श्री गुरु अरजन साहिब में कोई भेद नजर ही नहीं आता। श्री गुरु अरजन साहिब प्रत्यक्ष परमात्मा ही हैं। परमात्मा का प्रमुख गुण है— सृजन। उसकी सृजित की सृष्टि मनोहर और विस्मयकारी है। कोई वैसा सृजनकर्ता नहीं है और कोई वैसा सृजन नहीं है। इसी भांति श्री गुरु अरजन साहिब जैसा कोई सृजनकर्ता नहीं। जो सृजन उन्होंने किया उसकी कोई तुलना नहीं है। श्री गुरु अरजन साहिब ने श्री हरिमंदर साहिब रचा, श्री गुरु ग्रंथ साहिब को आकार प्रदान किया। वैसा कोई स्थान धरती पर नहीं है, वैसा कोई ग्रंथ मानव समाज के पास नहीं है। श्री गुरु अरजन साहिब ने धर्म-हित शहीदी का जो इतिहास रचा उसका भी कोई अन्य उदाहरण आज तक नहीं है। श्री गुरु अरजन साहिब का पूरा जीवन पूरी मानव सभ्यता के लिये एक अमूल्य धरोहर की तरह है।

श्री गुरु अरजन साहिब श्री गुरु रामदास साहिब के तीन पुत्रों में सबसे छोटे थे। बाल्यावस्था में ही उनकी आध्यात्मिक प्रतिभा प्रकट होने लगी थी, जिसे देख कर नाना श्री गुरु अमरदास साहिब ने भविष्यवाणी कर दी थी कि यह बालक मानवता का महान उद्धारक बनेगा। श्री गुरु अमरदास साहिब ने उन्हें 'बाणी का बोहिता' अर्थात् 'बाणी (ज्ञान) का बोहित (जहाज)' का विशेषण प्रदान किया था, जिसका आश्रय लेकर लोग, अज्ञान के सागर को पार कर

**ई– १७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ – २२६०१७, फोन : ९४१५९६०५३३, ८४१७८५२८९९*

सकेंगे। अल्पायु में ही श्री गुरु अरजन साहिब अपने पिता श्री गुरु रामदास साहिब का प्रतिनिधित्व करने लगे थे। गुरु साहिब ने संस्कृत आदि विभिन्न भाषाओं का गूढ़ ज्ञान प्राप्त किया और अनेक धर्म-ग्रन्थों का अध्ययन किया। वे कुशल घुड़सवार भी थे। श्री गुरु अमरदास साहिब और श्री गुरु रामदास साहिब के प्रभाव में उनका मन भी सेवा-कार्यों में रमने लगा था। तात्पर्य यह कि गुण उनमें संपूर्णता में विकसित होने लगे थे जो समय आने पर कामधेनु वृक्ष बन कर प्रकट हुए। नाना श्री गुरु अमरदास साहिब का उनके प्रति विशेष स्नेह था, इसलिये ११ वर्ष की आयु तक श्री गुरु अरजन साहिब का पालन-पोषण श्री गुरु अमरदास साहिब की निगरानी में हुआ। श्री गुरु अमरदास साहिब के ज्योति-जोत समाने के बाद पिता श्री गुरु रामदास साहिब ने ७ वर्ष तक यह उत्तरदायित्व निभाया। श्री गुरु अरजन साहिब श्री गुरु रामदास साहिब के ज्योति-जोत समाने के बाद १८ वर्ष की आयु में गुरुगद्दी पर विराजमान हुए। गुरु के रूप में उनके दर्शन ही निहाल-निहाल-निहाल करने वाले थे। शरण में आने वाले को प्रतीत होता कि वह दया, कृपा और प्रेम की वर्षा में सराबोर हो गया है।

निरमल भेख अपार तासु बिनु अवरु न कोई ॥
मन बच जिनि जाणिअउ भयउ तिह समसरि सोई ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४०९)*

श्री गुरु अरजन साहिब का दर्शन करने वाले को लगता कि वह किसी पावन, पवित्र स्वरूप के दर्शन कर रहा है जिसकी महिमा अपार है। ऐसी निर्मलता संसार में अन्यत्र कहीं है ही नहीं। दूसरी अनुभूति यह होती कि इतनी दयालुता कहीं अन्यत्र नहीं है। जो भी भावना और संकल्प से शरण में आता है गुरु अपने कंठ से लगा कर उसका उद्धार कर देता है। निर्मलता वहां प्रकट होती है जहां सहज हो, निर्लिप्तता हो। श्री गुरु अरजन साहिब सहजता की प्रतिमूर्ति थे। बाह्य परिस्थितियां कभी भी उनकी अंतर अवस्था को प्रभावित करने में सफल नहीं हुईं। श्री गुरु अरजन साहिब ने गुरुगद्दी के दावेदार अपने बड़े भ्राता प्रिथीचंद का आक्रोश ऐसे सहा जैसे कुछ घटित ही न हुआ हो। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन का अति कठिन कार्य सरलता व श्रेष्ठता से किया कि एक धर्म-ग्रंथ, जगत का अनुपम आदर्श बन गया। श्री अमृतसर साहिब नगर का प्रसार और श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण कराया जो संसार का पवित्रतम स्थल बन गया। धर्म के लिये शहीद हुए। शहादत की ऐसी अनूठी भावना सृजित की कि पूरा संसार आश्चर्यचकित रह गया। वास्तव में श्री गुरु अरजन साहिब का मानव-हित का संकल्प ही ऐसा था जिसमें व्याकुलता या पराजय का कोई स्थान नहीं था। गुरु साहिब अपने संकल्प के कारण ही अपने प्रत्येक मिशन में आजीवन सफल रहे। यह संकल्प था— परमात्मा पर अटल विश्वास और

सच हेतु अकाट्य प्रतिबद्धता।

कहन कहावन कउ कई केतै ॥
ऐसो जनु बिरलो है सेवकु जो तत जोग कउ बेतै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
दुखु नाही सभु सुखु ही है रे एकै एकी नेतै ॥
बुरा नही सभु भला ही है रे हार नही सभ जेतै ॥ १ ॥
सोगु नाही सदा हरखी है रे छोडि नाही किछु लेतै ॥
कहु नानक जनु हरि हरि हरि है कत आवै कत रमतै ॥ २ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३०२)

श्री गुरु अरजन साहिब ने अपने उपरोक्त वचन में आध्यात्म और धर्म का सार समाहित कर दिया। गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा की बात करने वाले, परमात्मा की भक्ति करने वाले असंख्य हैं। सम्पूर्ण संसार में परमात्मा की चर्चा हो रही है किन्तु परमात्मा को जानने वाले विरले ही हैं, जो युगों बाद संसार में आते हैं। मर्म यह है कि परमात्मा से मनुष्य का संबंध स्वामी और सेवक का है। जब मनुष्य इस संबंध को भली-भांति समझ कर निर्वाह करने लगता है तब दयालु परमात्मा उसे अंगीकार कर अपना अंश बना लेता है, अपने गुणों से उसे विभूषित कर देता है। परमात्मा का सेवक, सेवक न रह कर परमात्मा सदृश्य ही हो जाता है।

गुरु साहिब ने उन प्रभावों का भी वर्णन किया जो परमात्मा सदृश्य हो जाने पर प्रकट होने लगते हैं। परमात्मा से एकाकार होने पर मनुष्य सभी दुखों से मुक्त हो जाता है। सुख की अवस्था बन जाती है। सदा सर्वदा के लिये सुख ही सुख व्याप्त हो जाता है। कभी कोई अनिष्ट नहीं होता, सदैव भला ही भला होता है। परमात्मा सदैव अपने जन का भला ही करता है, कभी अहित नही होने देता। परमात्मा सदैव अपने जन को दुख नही होने देता, सदैव सुखपूर्वक रखता है। परमात्मा का जन सदैव आनंद में रहता है। उसे कभी शोक, संताप नहीं होता। क्योंकि परमात्मा का जन सदैव आनंद में रहता है, इसलिये वह दूसरों को भी सदैव आनंद ही बांटता है। श्री गुरु अरजन साहिब का गुरुत्व-काल पच्चीस वर्ष का था, जिसमें उन्होंने आनंद ही आनंद बांटा। गुरु साहिब ने सर्वाधिक बाणी उच्चारण की।

गुरु साहिब ने श्री गुरु रामदास साहिब के बनाये अमृत सरोवर को पक्का कराया, संतोखसर का कार्य पूर्ण कराया, तरनतारन ताल, रामसर बनवाया, लाहौर में बाउली आदि का निर्माण कराया। करतारपुर (जलंधर), तरनतारन साहिब, छेहरटा साहिब जैसे नगर बसाये। श्री गुरु अरजन साहिब के काल में सिक्खी का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ और बड़ी संख्या में लोग सिक्ख बने। गुरु साहिब के दरबार में दूर-दूर से सिक्ख संगत आती, जिनकी जिज्ञासा की पूर्ति गुरु साहिब बड़े ही सहज और सरल ढंग से किया करते थे। एक बार एक सिक्ख ने सवाल किया कि गुरमुख और विमुख (बेमुख) में क्या भेद है? श्री गुरु अरजन

साहिब ने कहा कि यदि किसी व्यक्ति को किसी कार्य के लिये भेजा जाये और वह कार्य पूर्ण कर प्रसन्नचित्त नज़र आए, वो गुरमुख है। यदि किसी ने बताया हुआ कार्य नहीं किया अथवा बिगाड़ दिया है तो वह सामने आना तो दूर मुँह ही मोड़ लेगा और रास्ता बदल लेगा। वह विमुख की श्रेणी में आएगा। इसी तरह गुरु का आदेश है कि मनुष्य नाम जपे, बांट कर खाये और बुरे कर्मों से विरत हो निर्मलता धारण करे। यदि कोई इसके विपरीत आचरण कर विकारों और दुविधा में लिप्त रहे तो वह गुरमुख नहीं हो सकता। श्री गुरु अरजन साहिब ने सिक्खों को ज्ञान से परिपूर्ण कर सभी जिज्ञासायें शांत करने के उद्देश्य से आगे कहा कि गुरमुख भी तीन प्रकार के हैं और विमुख अथवा मनमुख भी तीन प्रकार के हैं। गुरु साहिब ने कहा कि एक प्रकार का गुरमुख वह है जिसने पाप-कर्मों से मुख मोड़ लिया है और गुरु की शिक्षाओं के अनुसार जीवन व्यतीत करता है। उसके साथ कोई एक बार भी भलाई कर दे तो वह उसके साथ भलाई ही करता है। उसकी भलाई को कभी भूलता नहीं और अपनी भलाई कभी जताता नहीं है। दूसरी तरह का गुरमुख वह है जो सभी के साथ भलाई करता है। वह आशा रखता है कि अन्य भी उसके साथ भलाई करें किन्तु वह कभी भी भलाई करना छोड़ता नहीं है। तीसरी तरह का गुरमुख वह है जिसके अंतर में ज्ञान का प्रकाश हो गया है। वह सभी का भला करता है। कोई बुरा भी करे, ऐसा गुरमुख उसका भी भला करता है। इसी तरह श्री गुरु अरजन साहिब ने तीन तरह के विमुख अथवा मनमुख बताये हैं। गुरु साहिब ने कहा कि एक मनमुख वो है जो सदा अपने मन की ही मानता है अर्थात् अपना स्वार्थ ही देखता है। वह सदैव पाप-कर्म ही करता है, किसी का भी भला नहीं करता। कोई उसके साथ भलाई करे तो उसे भुला देता है। यदि किसी अन्य से बुरा हो जाये तो उसकी भरपूर निंदा, अपयश करता है। दूसरी तरह का मनमुख वह है जो दूसरे का भला होते देख दुखी हो जाता है, बल्कि ऐसा प्रयास करता है कि किसी का बनता हुआ कार्य बिगड़ जाये। किसी से कभी कुछ बुरा हो जाये तो जी भर कर उसकी बुराई किये बिना नहीं रहता। सदैव दूसरों की जलन में रहता है। तीसरी तरह का मनमुख निकृष्टतम श्रेणी का है। मुख से तो मीठे वचन बोलता है किन्तु मन में सदैव जलन, ईर्ष्या की अग्नि दहकती रहती है। वह सभी से वैर रखता है। वह सच, धर्म के उपदेश सुनता ही नहीं और कहता फिरता है कि उसे तो धर्म-कर्म का कोई लाभ नहीं हुआ। वह निंदा, ईर्ष्या में ही सुख प्राप्त करता है। श्री गुरु अरजन साहिब ने तीसरी श्रेणी का श्रेष्ठतम गुरमुख बनने को प्रेरित किया है। श्री गुरु अरजन साहिब स्वयं इसका प्रत्यक्ष प्रमाण थे। उनका जीवन बिना किसी भेदभाव के मानव-मात्र की भलाई, कल्याण को समर्पित था।

गुरु साहिब के दरबार से कभी कोई निराश नहीं गया। उनकी महिमा सभी वर्गों में स्थापित हुई। इससे मुगल सत्ता चिंतित हो उठी। उसे अपने धर्म इसलाम के प्रसार में बाधा नज़र आने लगी। उस समय तक अकबर के बाद जहांगीर मुगल शासन के तख़्त पर बैठ चुका था। वह अकबर की अपेक्षा अधिक कट्टर मुसलमान था। उसे सत्ता संभालने के बाद अपने पुत्र खुसरो के ही विद्रोह का सामना करना पड़ा। खुसरो का विद्रोह सफल नहीं हुआ तो उसे पंजाब की ओर भागना पड़ा। जहांगीर उसका पीछा करता हुआ गोइंदवाल साहिब, तरनतारन के रास्ते लाहौर तक गया। मार्ग में जहांगीर उन सभी को दंड देता गया जिन-जिन पर खुसरो की सहायता करने का उसे संदेह था। लाहौर में गुरु-घर के प्रति ईर्ष्या और विरोध रखने वालों ने जहांगीर के झूठे कान भरे कि श्री गुरु अरजन साहिब ने खुसरो की सहायता की थी। जहाँगीर को यह भी बताया गया कि श्री गुरु अरजन साहिब के प्रभाव में कई मुसलमान भी सिक्ख बन रहे हैं। जहांगीर, जो भारत में इसलाम धर्म के विस्तार के सपने देख रहा था, इसे कैसे सहन करता! वह कानों का कच्चा था, इसलिये तथ्यों की कोई पड़ताल नहीं की। वह गुरु साहिब के प्रति शत्रुता के भाव से भर गया। गुरु साहिब द्वारा खुसरो की सहायता करना और सिक्ख धर्म का बढ़ते प्रभाव, मूलत: दो कारण रहे, जिनके चलते जहांगीर ने मन बना लिया कि या तो वह गुरु साहिब को इसलाम धारण करने को विवश कर देगा अथवा शहीद करा देगा। इस बीच खुसरो को पकड़ लिया गया और लाहौर लाकर साथियों सहित मौत के घाट उतार दिया गया। जहांगीर ने यह विश्वास कर लिया कि खुसरो की मुलाक़ात श्री गुरु अरजन साहिब से हुई थी और गुरु साहिब ने उसकी सहायता की थी, जबकि इसका कोई प्रमाण नहीं था और यह आधारहीन आरोप था। वास्तव में यह श्री गुरु अरजन साहिब के विरुद्ध रचा गया षड्यंत्र था जिसका मुख्य सूत्रधार शेख अहमद सरहद्दी था, जिसने अकबर पर दबाव बना कर जहांगीर को गद्दी दिलवाई थी, क्योंकि अकबर खुसरो को राजपाट सौंपना चाहता था। जहांगीर के बादशाह बनने के बाद शेख अहमद सरहद्दी ताकतवर हो गया था और इसलाम के प्रसार की मुहिम तेज करना चाहता था। पंजाब में श्री गुरु अरजन साहिब उसे अपनी राह की बाधा नज़र आ रहे थे। जहांगीर ने श्री गुरु अरजन साहिब को कैद कर अपने सामने पेश करने का हुक्म दिया, किन्तु गुरु साहिब की गिरफ्तारी और पेशी से पूर्व ही वो अपने अहलकारों के साथ लाहौर से दिल्ली की ओर प्रस्थान कर गया। जहांगीर ने तत्कालीन कानून यासा–ए–सियासत के अंतर्गत गुरु साहिब को कठोर दंड देकर खत्म करने का हुक्म दिया था। इसका उल्लेख जहांगीर ने स्वयं अपनी पुस्तक 'तुजकि-जहांगीरी' में किया है। इस दंड

का अर्थ दोषी को इस तरह कष्ट देकर खत्म करना है कि उसके शरीर से एक भी बूंद रक्त धरती पर न गिरे। इसलामिक शासन में धार्मिक व्यक्तियों को इसी विधि से दंड दिया जाता था क्योंकि उनका मानना था कि यदि किसी धार्मिक व्यक्ति का रक्त ज़मीन पर गिरता है तो उसकी आत्मा दंड देने वाले से बदला लेती है। इतिहासकारों का मानना है कि श्री गुरु अरजन साहिब से लाहौर में विभिन्न सवाल किये गये और श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बारे में संदेह व्यक्त किये गये। कहा जाता है कि जहांगीर ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में हज़रत मुहम्मद साहब और इसलाम की प्रशंसा लिखने को कहा। गुरु साहिब ने इनकार कर दिया। गुरु साहिब जब किसी भी दबाव से अप्रभावित रहे तो उन्हें दो लाख रुपये दंड भरने को कहा गया। गुरु साहिब ने इससे भी इनकार कर दिया। मुगल सलतनत का एक दरबारी चंदू था, जो अपनी बेटी का विवाह गुरु साहिब के सुपुत्र श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ करना चाहता था। गुरु साहिब ने इस संबंध से मना किया तो वह भी शत्रु बन गया।

जहांगीर तो कठोर सजा श्री गुरु अरजन साहिब के लिये पहले ही सोच चुका था। गुरु साहिब की अविचल और अडोल अवस्था ने मुगलों के अहंकार पर जबरदस्त चोट की, जिससे उनकी क्रूरता चरम पर आ पहुंची। इस बीच प्रतिष्ठित सूफी संत साँई मियां मीर जी, जो गुरु साहिब के परम मित्र थे और जिनसे गुरु साहिब ने श्री हरिमंदर साहिब के भवन की नींव रखवाई थी, ने अपनी दिव्य शक्ति का इस्तेमाल करने की बात कही, किन्तु गुरु साहिब ने उन्हें मना कर दिया। गुरु साहिब अजेय अवस्था के स्वामी थे और अजेय रहने को संकल्पबद्ध थे। उनकी दृष्टि भविष्य पर थी। अपने संकल्प से उन्होंने एक आधार बनाया जिस पर खड़े होकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी गर्व से कह सके थे कि "देह सिवा बर मोहि इहै सुभ करमन ते कबहूं न टरों॥ न डरों अरि सो जब जाइ लरों निसचै कर अपनी जीत करों॥" श्री गुरु अरजन साहिब लाहौर को जीतने आये थे, गुरु-घर के वैरियों के हौसले और दम को जीतने आये थे। सभी तरह से हारने के बाद मुगलों ने अंतिम उपाय, जो उनके वश में था, करना आरंभ किया। इस उपाय को गुरु साहिब ने अपने संयम और धैर्य से जीत लिया। उन्होंने गुरु साहिब को यातनायें देनी आरंभ कर दीं। हर यातना इस आशा से दी गई कि अब गुरु साहिब विचलित हो उठेंगे, किन्तु हर बार वैरी को निराशा हाथ लगी। उन्हें ज्ञात ही नहीं था कि उनके सामने आसन लगा कर बैठे श्री गुरु अरजन साहिब मात्र शरीर नहीं, एक शक्ति हैं, परमात्मा सदृश्य शक्ति, जो सर्वोपरि और सर्वसशक्त है। सृजन और विनाश स्वयं जिसके हाथ में है, उसे भला कोई कैसे मिटा सकता है! गुरु साहिब को भूखा रखा गया। सोने

नहीं दिया गया। खौलते हुए पानी की देग में बैठाया गया और नीचे आग जलाई गई। अगले दिन शरीर पर गर्म-गर्म रेत डाली गई। तीसरे दिन तप रहे तवे पर बैठा कर नीचे आग जलाई गई और शरीर पर फिर तपती हुई रेत डाली गई। कल्पना की जा सकती है कि गुरु साहिब के शरीर का क्या हाल हुआ होगा। सभी स्तब्ध थे कि गुरु साहिब का मन उनके तन से पूरी तरह से अप्रभावित है। तन पर मन का नियंत्रण था। मन परमात्मा में रमा हुआ था। वह शोक–हर्ष, दुख–सुख से दूर सहज और निर्लिप्त बना हुआ था, जिससे मुख से उफ़ तक नहीं निकली। शरीर निष्प्राण-सा हो चला था, किन्तु परमात्मा-प्रेम के रंग ने उनके अंदर अक्षय जीवन-ज्योति जला रखी थी, जिससे दुख, दर्द निकट तक आने का साहस नहीं कर पा रहे थे। जब क्रूरता की इंतिहा हो गई और कुछ बाकी न रहा तो गुरु साहिब को निकट बह रही रावी नदी के ठंडे पानी में उतार दिया गया। श्री गुरु अरजन साहिब ज्योति-जोत समा गये और सिक्खों को शहीदी का पहला पाठ पढ़ा गये, जिसे बाद में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सम्पूर्ण किया। श्री गुरु अरजन साहिब की शहीदी को समझे बिना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सरबंसदान को समझा नहीं जा सकता। आज सिक्ख यदि सुख और आनंद में है तो उसका जन्म श्री गुरु अरजन साहिब के लाहौर में तीन दिन सहन किये असह्य दुखों और त्रास से हुआ है। सिक्ख की चढ़दी कला रावी के ठंडे पानी में गुरु साहिब के निढाल शरीर से उभरी है। सिक्ख पंथ ही नहीं, पूरी मानवता श्री गुरु अरजन साहिब की ऋणी है कि उन्होंने मानवीय मूल्यों की अस्मिता को बचा लिया ताकि सभी सुख, प्रेम से जीवन व्यतीत कर सकें :

तुम तउ राखनहार दइआल ॥
सुंदर सुघर बेअंत पिता
प्रभ होहु प्रभू किरपाल ॥१॥ रहाउ ॥
महा अनंद मंगल रूप तुमरे बचन अनूप रसाल ॥
हिरदै चरण सबदु सतिगुर को नानक बांधिओ पाल ॥२ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६८०)

श्री गुरु अरजन साहिब की आरंभ की हुई शहीदी परंपरा मानवीय हितों की रक्षक सिद्ध हुई है। गुरु साहिब के रचे सुंदर स्थान श्री हरिमंदर साहिब की शोभा पूरे जग में है। गुरु साहिब द्वारा संपादित श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी असंख्य लोगों के मन शीतल कर रही है। जिसने श्री गुरु अरजन साहिब का मन में सिमरन किया, वह भवसागर से पार हो गया।

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के काल में सिक्ख पंथ की स्थिति

*–डॉ. जगजीवन सिंघ**

श्री गुरु नानक साहिब के आगमन (१४६९ ई.) से लेकर दसम पातशाह के ज्योति-जोत समाने (१७०८ ई.) के समय तक, मुगलों की राजनैतिक सत्ता के समानांतर, लगभग २३९ वर्ष के दौरान, भारत विशेषकर पंजाब की धरती पर, एक बड़ा धार्मिक और सांस्कृतिक इंकलाब आया, जिसने पंजाब के लोगों, खासकर सिक्खों के मन, चरित्र, व्यक्तित्व, आचार-व्यवहार और जीवन-ढंग में उल्लेखनीय परिवर्तन किया। इस समय के दौरान श्री गुरु नानक साहिब द्वारा आरंभ किए कथनी और करनी की समानता वाले निराले पंथ का प्रताप और प्रभाव इतना बढ़ा कि गुरमति विचारधारा को पूर्णतया समर्पित गुरसिक्खों की कोई कमी न रही। श्री गुरु नानक साहिब ने जिस उच्च आदर्श के लिए मानव की संरचना की जो योजना बनाई, वह दस गुरु साहिबान के समय के दौरान न केवल निरंतर जारी रही, बल्कि यह उस समय बुलंदियों को छू गई, जब सन् १६९९ ई. की बैसाखी वाले दिन, दसम पातशाह ने श्री अनंदपुर साहिब की पवित्र धरती पर खंडे की धार में से 'खालसा' की सृजना का आलौकिक करिश्मा किया।

प्रथम पातशाह से दसम पातशाह तक का २३९ वर्ष का समय (गुरु-काल), जिसे भारत में चली विशाल भक्ति-लहर का सुनहरी काल भी कहा जाता है, निस्संदेह सिक्ख धर्म-दर्शन और इसके द्वारा सृजित विलक्षण खालसाई किरदार, व्यक्तित्व व सभ्याचार के प्रताप एवं प्रकटीकरण का सबसे अधिक गौरवमयी दौर था।

दसम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ज्योति-जोत समा जाने (१७०८ ई.) के बाद का, बाबा बंदा सिंघ बहादुर और सिक्ख मिसलों की बुलंदी वाला लगभग १०० वर्ष (मिसल-काल) का सिक्ख इतिहास बताता है कि देसी हाकिमों और विदेशी हमलावरों द्वारा ढाए गए कहर व जुल्म के कारण, इस समय के दौरान गुरु-पंथ को, गुरु-काल से भी अधिक बड़ी मुसीबतों, दुश्वारियों एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ा। जैसे सोना आग में तप कर कुंदन हो जाता है, इसी तरह इस घोर संकट के

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर, पंजाबी विभाग, माता गुजरी कॉलेज, फ़तिहगढ़ साहिब, फोन : ९९१४३-०१३२८*

समय में, गुरु के ख़ालसे का किरदार और व्यक्तित्व और भी शुद्ध व बुलंद होता गया।

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, जो कि मिसल-काल के दौरान कौम द्वारा सर्वप्रवानित प्रमुख सिक्ख सरदारों में से एक थे और सिक्खों की कुल १२ मिसलों में से एक अग्रणी मिसल, 'आहलूवालिया मिसल' के मुख्य सरदार भी थे, का जन्म ३ मई, सन् १७१८ ई. को, सिक्ख इतिहास के उस भयानक दौर में हुआ जब सन् १७१६ ई. में बाबा बंदा सिंघ बहादुर व उनके साथी तकरीबन ८०० सिंघ वीरों को दिल्ली में अति दर्दनाक मौत देकर शहीद करने के बाद, समूची सिक्ख कौम पर बादशाही निष्करुणा का तूफान मंडरा रहा था, फिर भी गुरु का खालसा, पूरी चढ़दी कला में, अकाल पुरख के हुक्म को मीठा कर मानते हुए अडिग था।

सन् १७१८ ई. में जन्मे सुलतान-उल-कौम सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया का देहांत २० अक्तूबर, सन् १७८३ ई. को हुआ। इस प्रकार कुल मिला कर उनका जीवन-काल (१७१८-१७८३ ई.) ६५ वर्ष का बनता है। हमारे इस लेख/खोज-पत्र का विषय या मुख्य सरोकार 'सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के काल में सिक्ख पंथ की स्थिति' को समझना-समझाना और दिखाना है। विषय को आसान और सिलसलेवार ढंग के साथ पाठकों के सम्मुख पेश करने हेतु, इसे मुख्य रूप से तीन अंतर-सम्बन्धित भागों में विभाजित किया गया है।

लेख को स्पष्ट और ठोस योजना प्रदान करने के लिए, प्रथम भाग में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के समूचे जीवन-वृत्तांत को ऐतिहासिक कालक्रम के अनुसार समझने का यत्न किया गया है। दूसरे भाग में उनके जीवन-काल में भारत और पंजाब के समूचे सामाजिक, धार्मिक और विशेष कर राजनैतिक हालात को दृष्टिगोचर किया गया है। तत्पश्चात् दोनों भागों के आत्मसाती हवाले के साथ, तीसरे भाग में विषय की आत्मा के साथ जुड़े इस बुनियादी और महत्वपूर्ण प्रश्न कि उस समय सिक्ख पंथ की स्थिति कैसी थी, का जवाब देने का यथायोग्य प्रयास किया गया है। उल्लेखनीय है कि विषय के ये तीनों पक्ष या भाग, क्योंकि एक दूसरे के साथ निकट से संलग्न तथा अंतर-सम्बन्धित हैं, निष्कर्षत: पेशकारी के दौरान स्वाभाविक रूप से ये अलग-अलग तौर पर नहीं, बल्कि एक दूसरे के साथ जुड़ कर और मिश्रित होकर पेश हुए हैं।

मई, १७१० ई. में बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सरहिंद फतह की। तत्पश्चात् उन्होंने यमुना और सतलुज के मध्यवर्ती क्षेत्र में स्वतंत्र ख़ालसा

राज का परचम लहराया। इसके कुछ समय बाद १० दिसंबर, १७१० ई. को हिंदुस्तान के बादशाह बहादुर शाह द्वारा ख़ालसा के कत्ल-ए-आम का पहला हुक्मजारी हुआ। हुक्म यह था कि "नानक प्रशतान रा हर जा किह ब-याबन्द ब-कत्ल रसानन्द" अर्थात् "नानक-पूज (सिक्ख) जहाँ कहीं भी मिलें, कत्ल कर दिए जाएँ।"

गुरु के सिक्खों का खुराखोज मिटा कर रख देने वाला मुग़ल बादशाह बहादुर शाह का यह अत्याचारी हुक्म, बादशाह फ़रुख़सियर ने अपने समय (सन् १७१३-१८), बाबा बंदा सिंघ बहादुर की जून १७१६ ई. में शहादत के तुरंत बाद, थोड़ा-सा बदल कर, इस इबारत के साथ दोहराया कि "बाद कतलि उ हुक्म शुद कि हर जा ईं फ़िरका रा याबन्द बे तअम्मल बि-कुशन्द" अर्थात् उस (बंदा सिंघ बहादुर) के कत्ल के बाद हुक्म हो गया कि इस पंथ के लोग जहाँ भी मिलें, बिना कुछ जाने मार दिए जाएँ।"

उपरोक्त दो ठोस राजनैतिक ऐतिहासिक संदर्भ से बिल्कुल स्पष्ट है कि सरदार जस्सा सिंघ के जन्म एवं बाल-अवस्था के दिनों में सिंघों पर हो रहे राजसी अत्याचार इंतहा की हद को पार कर चुके थे। यह वो समय था जब खालसा, हुकूमती जब्र की कुठाली में से, कुंदन बन कर निकलने की प्रक्रिया में से गुज़र रहा था और हर तरफ़ पंथक-प्रेम एवं कुर्बानी का जज़्बा उमड़ रहा था। गुरु-पंथ की आन-शान को हर हाल में बरकरार रखने के लिए अतीत में कुर्बान हो चुके शहीदों की रूहें, गुरु ख़ालसा में पुन: जन्म लेकर, अपने मिशन को पूरा करने के लिए तैयारियाँ कर रही थीं। इस समय जहाँ एक तरफ़ ख़ालसा शहादत प्राप्त कर रहा था, वहीं दूसरी तरफ भविष्य के संत-सिपाही मानुषों का जन्म भी हो रहा था। यह वो समय था जब सिक्खों के शूरवीर महाराजा सरदार रणजीत सिंघ के दादा सरदार चढ़त सिंघ शुकरचक्किया के अलावा भंगी, रामगढ़िया तथा कन्हैया मिसल के प्रमुख सरदारों तथा अन्य ऐसे असंख्य शूरवीर सिंघों का जन्म हुआ, जिन्होंने भविष्य के अति कठिन समय में, अपनी बाकमाल सिक्खी आस्था और बाहुबल के बलबूते कौम का योग्य नेतृत्व किया।

सरदार जस्सा सिंघ की बाल-अवस्था (१७१८-३० ई.) के काल का सिक्ख इतिहास इस तथ्य की भी जानकारी देता है कि उस समय जहाँ एक तरफ़ सिक्खों के मन में गुरु-घर के प्रति प्रेम व श्रद्धा का भाव अति प्रबल एवं प्रचंड था, वहीं गुरु-घर भी अपने मुरीदों अर्थात् सिक्ख सेवकों के लिए प्रेम-पालना, बेसहारों का सहारा बना हुआ था। दसम पातशाह के ज्योति-जोत समा जाने के बाद, इस

समय (१७१८-३० ई.) माता सुंदरी जी दिल्ली में निवास कर रहे थे।

सन् १७२२ ई. में जब सरदार जस्सा सिंघ की आयु केवल चार वर्ष थी तो उनके पिता सरदार बदर सिंघ परलोक गमन कर गए। सरदार जस्सा सिंघ और उनकी माँ के लिए यह बेहद कठिन समय था। एक तरफ़ पत्नी के सिर से पति का और पुत्र के सिर से पिता का साया उठ गया, दूसरी तरफ़ मुग़ल हुकूमत सिक्खों के खून की प्यासी बनी हुई थी। सरदार जस्सा सिंघ की माँ को इस तथ्य का भी शिद्दत के साथ एहसास था कि उसके पुत्र का जन्म, दसम पातशाह द्वारा किसी समय उन्हें (पति-पत्नी को) दी गई आशीष का ही फल था। ऐसे कठिन समय में वह अपने पुत्र को साथ लेकर, सन् १७२३ ई. में, दिल्ली में माता सुंदरी जी की शरण में आ गई। शरण में आए प्रेममयी माँ-पुत्र ने, माता सुंदरी जी के पास रहते हुए उनकी इतनी सेवा की कि वे उनसे बहुत प्रभावित हुए। विशेषतया माँ-पुत्र के सुरीले कीर्तन और गुरबाणी-प्रेम ने, माता सुंदरी जी के कोमल हृदय पर इतना गहरा प्रभाव डाला कि उन्होंने इनको अपने पास ही रख लिया।

सरदार जस्सा सिंघ के प्रति माता सुंदरी जी की प्रेम-भावना की गहराई इस हद तक थी कि माता जी उसे अपने पुत्र की भांति खिलाते-पिलाते, दुलारते और देखभाल करते थे। छोटे-से सरदार जस्सा सिंघ की धार्मिक परिपक्वता और गुरबाणी के प्रति प्रेम-भावना को देखते हुए वे अक्सर भावुक हो जाया करते थे, आशीर्वाद देकर उसकी झोली भर दिया करते थे।

अगले छ:-सात वर्ष दोनों माँ-पुत्र, माता सुंदरी जी की छत्र-छाया में दिल्ली में रहे। सरदार बाघ सिंघ हल्लोवालिया सरदार जस्सा सिंघ का मामा था। अपनी कोई संतान न होने के कारण, उसका लगाव अपने भाँजे सरदार जस्सा सिंघ के साथ अधिक था। सन् १७२९ ई. में उसके द्वारा बड़ी अधीनतापूर्वक फरियाद करने पर माता सुंदरी जी ने दोनों माँ-पुत्र को, उसके साथ जलंधर भेज दिया, क्योंकि उन दिनों लाहौर के इर्द-गिर्द मुगलों की गश्ती फौज, सिंघों के पीछे हाथ धोकर पड़ी हुई थी, अत: हालात की नज़ाकत को देखते हुए उन दिनों सरदार बाघ सिंघ अपने गाँव हल्लो से पलायन कर, परिवार सहित जलंधर आ बसे थे।

ऐतिहासिक घटनाक्रम के गहन अध्ययन से उस समय के सिक्ख धर्म की स्थिति के बारे में जो चार ठोस तथ्य उभर कर सामने आते हैं, वे इस प्रकार हैं :—

१. उस समय सिक्ख धर्म में जत्थेदार कपूर सिंघ जैसे भजन-बंदगी वाले और बुलंद खालसाई किरदार वाले त्यागी योद्धा बड़ी

संख्या में मौजूद थे।

२. समूह सिक्ख संगत और सिंघों के मन में ऐसे शोभनीय व्यक्तित्व वाले मानुषों को अति सम्मान प्राप्त था।

३. सिक्खों/ सिंघों में लालसा एवं सत्ता-प्राप्ति की जगह त्याग, कुर्बानी और पंथ-परस्ती की भावना अधिक प्रचंड व बलवान थी।

४. धर्म और धार्मिक लोग, राजनीति और राजनैतिक लोगों पर भारू थे अर्थात् धर्म राजनीति के अधीन नहीं, बल्कि राजनीति धर्म के अधीन थी। दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के हुक्माधीन, सन् १७२६ ई. में ज़करिया ख़ान को लाहौर का सूबेदार मुकर्रर किया गया था। उससे पहले उसका पिता अबदुसमद ख़ान लाहौर का सूबेदार था। ज़करिया ख़ान ने अपने पिता की नीति में बदलाव करते हुए सिक्खों के विरुद्ध सख़्ती का दौर पुन: शुरू कर दिया। उसके द्वारा किए गए अत्याचार के अधीन एक बार फिर सिक्खों के सिर पर इनाम रख दिए गए। सिक्खों के विरुद्ध नियुक्त विशेष गश्ती फ़ौज ने, सिक्खों को लोहे की जंजीरों में जकड़ कर लाहौर लाने की प्रक्रिया दोबारा आरंभ कर दी। इस प्रकार हज़ारों सिंघों को निर्दयतापूर्वक कत्ल कर दिया गया। अनेक सिक्ख योद्धा मुगलों के साथ छापामार युद्ध लड़ते हुए घर-बार त्याग कर रावी दरिया के किनारे, काहनूंवान के जंगलों, कठुआ, श्री अनंदपुर साहिब आदि पहाड़ी ठिकानों पर जा छिपे। कई मालवा क्षेत्र के लक्खी नामक जंगल से होते हुए, बीकानेर के मारुस्थल की तरफ चले गए।

ऐसी विकराल हालत में 'खालसा दल' ने मुगलों के विरुद्ध लड़ाई की रणनीति में बदलाव करते हुए खालसा दल को दो दलों— बुड्ढा दल तथा तरुणा दल में विभाजित कर लिया और मुगलों के विरुद्ध नये सिरे से छापामार युद्ध जंग आरंभ कर दिया। ये दोनों दल आपसी तालमेल के अधीन, अचानक हमला कर मुगलों की गश्ती फ़ौज को खदेड़ने के साथ-साथ, शाही खजाने व रसद को वापस छीनने का काम भी किया करते थे। कार्रवाई के बाद ये छापामार दल घोड़ों को भगा, बिजली की तेज़ी के साथ मुग़ल फौज की मार से कोसों दूर तालाबों, जंगलों व पहाड़ों की गुफाओं में जा छिपते थे। इन सिंघों के पकड़ में न आने के कारण, तिलमिलाती मुग़ल फौज़ ने इन्हें राशन-पानी, संदेश और नैतिक मदद देने वाले 'गुरमुख सिंघों' को पकड़ना व कष्ट देना आरंभ कर दिया।

यहाँ यह नुक्ता वर्णनीय है कि सिंघों द्वारा सरकारी खजाना (मालिया) छीनने का उद्देश्य लूटपाट करना या किसी लालचवश धन-माल

इकट्ठा करना नहीं था, रणनीतिक पक्ष से उनका ऐसा करने का मकसद केवल इतना था कि लाहौर की हुकूमत तिलमिला उठे। उनका ध्यान सिंघों पर ज्यादती करने से हट जाये। सन् १७३३ ई. में ज़करिया ख़ान द्वारा मजबूर होकर, दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के माध्यम से सिंघों पर लगी पाबंदी को हटाना और उन्हें दी गई नवाबी (जागीर) इस तथ्य का प्रमाण है कि दल खालसा अपनी रणनीति और लक्ष्य-प्राप्ति में सफल रहा। घोर संकट और मुश्किलों के दौर ने, सिंघों को ताकतवर, एकजुट और एक-जान कर दिया था। नवाबी मिलने के बाद, अब उन्होंने घर जाकर कुछ समय के लिए सुख की साँस ली।

दूसरी तरफ सिघों के हाथों परेशान और खिन्न ज़करिया ख़ान ने सिंघों को पदवियाँ (जागीर) देने की रणनीति, नेक नीयत के साथ नहीं बल्कि गलत नीयत के अधीन, अपने आप को फिर से मजबूत करने और सिंघों को शिथिल करने के उद्देश्य से बनाई थी। सन् १७३५ ई. में जैसे ही उसे अपने इन दोनों उद्देश्यों में सफलता मिलने के संकेत मिले, उसने इलाके में अमन-शांति स्थापित हो जाने के बहाने से, प्रदान की हुई जागीर ज़ब्त कर ली और फिर अपने पुराने रंग में आ गया।

सिक्खों पर पुरानी सभी पाबंदियों को जारी रखते हुए अब नया उपद्रव यह किया कि सिक्खों के महान केंद्र श्री हरिमंदर साहिब श्री अमृतसर साहिब के दर्शन करने व अमृत सरोवर में स्नान करने पर पाबंदी लगा दी गई। यहाँ पर ही बस नहीं, और बड़ा कहर ढहाते हुए श्री हरिमंदर साहिब की सेवा-संभाल कर रहे भाई मनी सिंघ जी को १७३८ ई. में लाहौर में उनका बंद-बंद काट कर शहीद कर दिया गया। उनके समय के सिंघों को चरखड़ियां पर चढ़ा कर शहीद कर दिया। श्री दरबार साहिब का सरोवर मिट्टी आदि से पाट दिया।

हृदयबेधक इस सारे घटनाक्रम ने ख़ालसा को आक्रोशित कर दिया। बदले में हमला करते हुए ख़ालसा ने अबदुर रज़ाक नामक उस काज़ी को मार मुकाया, जिसने भाई मनी सिंघ जी को पकड़ कर लाहौर पहुँचाया था। दूसरे दौर में उन्हें जहाँ कहीं भी कोई सरकारी हाकिम मिला, उसे मौत के घाट उतार दिया गया। पंजाब के माझा क्षेत्र में भारी अराजकता फैल गई। हालात हाथ से निकलते देख ज़करिया ख़ान ने अपने दीवान लखपत राय और भतीजे मुख़लिस ख़ान की कमान में दस हज़ार की विशेष गश्ती फ़ौज, सिंघों के विरुद्ध चढ़ा दी। साथ ही ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो सिंघों को पकड़वाएगा या किसी सिंघ का सिर काट कर लाएगा, उसे इनाम दिया जायेगा। डॉ. गंडा

सिंघ के अनुसार, मुगलों की गश्ती फ़ौज ने तकरीबन चार महीने तक लगातार इतना कोहराम और उपद्रव मचाया कि सिंघों को एक बार फिर घर घाट छोड़ने और छापामार जंग लड़ने के लिए विवश होना पड़ा।

घोड़ों की काठियों पर बसेरा करने वाले सिंघों तथा ज़कारिया ख़ान की गश्ती फौज के दरमियान लुकाछिपी वाली जंग का यह सिलसिला, जनवरी, १७३९ ई. में नादिर शाह के लुटेरे के रूप में लाहौर के रास्ते दिल्ली जाने और दिल्ली को जी भर कर लूटने के पश्चात मई, १७३९ ई. में वापस लौटने तक जारी रहा। इतिहास साक्षी है कि दिल्ली से लौटते समय, मई १७३९ ई. में जब लूट के माल से लदा नादिर शाह का जंगी काफ़िला कीरतपुर साहिब और श्री अनंदपुर साहिब के नीम पहाड़ी रास्ते द्वारा सियालकोट की तरफ जा रहा था तो पहाड़ों-कंदराओं में छिपे सिंघों ने फ़ौज पर हमला कर फौजियों में दहशत पैदा कर दी और बड़ी मात्रा में रसद व माल-ख़ज़ाना उनसे छीन लिया।

जंगलों व पहाड़ों में भूखे पेट दिन काट रहे सिंघों की ऐसी होशियारी और ज़िंदादिली देख, नादिर शाह बड़ा हैरान और परेशान हुआ। दिल्ली जाते हुए पहले ही उसकी अधीनता स्वीकार कर चुके ज़कारिया ख़ान को जब वह लौटते समय सियालकोट के निकट दोबारा मिला तो सिंघों द्वारा चानक किए हमले से घबराए हुए ने उससे पूछा कि "ये सिक्ख कौन हैं और कैसे लोग हैं, जिन्होंने मेरी दिल्ली की लूट से लदी हुई फ़ौज का पीछा कर सारा माल छीन लिया है और उनसे भयभीत मेरी फ़ौज का काफिला तितर-बितर हो गया है?"

ज़कारिया ख़ान ने जवाब दिया कि "यह फकीरों का टोला है, जो लगभग छ: महीने के बाद श्री अमृतसर साहिब के सरोवर में स्नान करने आता है।" नादिर शाह ने फिर पूछा कि "इनके घर घाट कहाँ हैं?" इसके उत्तर में ज़कारिया ख़ान ने कहा कि "इनके घर, इनके घोड़ों की काठियों पर हैं।" यह सुन कर नादिर शाह मुस्कराया और कहने लगा, "तो फिर इनसे डरना ही चाहिए। वो समय निकट आया जानो, जब ये लोग इस मुल्क के मालिक बन जाएंगे।"

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के जीवन-काल (१७१८-८३ ई.) की सिक्ख पंथ की समग्र परिस्थिति, इसके सार-तत्व एवं इसके भविष्यगत की रूप-रेखा को समझने-समझाने, दिखाने और रेखांकित करने के पक्ष से नादिर शाह एवं ज़कारिया ख़ान के दरमियान हुआ उपरोक्त संवाद निस्संदेह बेहद गहरा, सूत्रिक, भावपूर्ण, रमज़मयी, कीमती और बुनियादी महत्व (सौ हाथ रस्सा, सिरे पर गाँठ)

वाला है। यह संवाद जहाँ एक तरफ़ उस समय सिक्ख कौम को दरपेश गहरे संकट के प्रति जानकारी प्रदान करता है, वहाँ बड़ी चुनौतियों के व्यापक परिप्रेक्ष्य में सिंघों की सृजनात्मक सहमति, चढ़दी कला वाले एकाग्र मन, बुलंद खालसाई किरदार, गौरवमयी व्यक्तित्व, आस्था और हिम्मत को अचेत रूप से सजदा व सलाम करने के माध्यम से दिखाने के साथ-साथ उनकी गुरमति के अनुसार फ़कीराना तर्ज़-ए-ज़िंदगी (धार्मिकता) के उज्जवल दीदार भी करवाता है।

इस समय (१७३९ ई.) के बाद अगस्त १७४० ई. में भाई सुक्खा सिंघ और भाई महिताब सिंघ द्वारा मस्सा रंघड़ (राजपूत मुसलमान) का सिर काट कर ले जाने, १ जुलाई, सन् १७४५ ई. के भाई तारू सिंघ जी की हुई शहादत, काहनूंवान के छंभ (जोहड़) में, मई १७४६ ई. में घटित छोटा (पहला) घल्लूघारा, फरवरी १७६२ को मालेरकोटला के निकट कुप्प रुहीड़ा में घटित बड़ा (दूसरा) घल्लूघारा, मीर मन्नू के समय के ज़ुल्मों की भयंकर दास्तान, अहमद शाह दुर्रानी और तैमूर शाह के अनेक आक्रमणों से लेकर सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के देहांत (१७८३ ई.) तक के समग्र सिक्ख इतिहास का निकट अध्ययन-विश्लेषण इस तथ्य की भली-भांति पुष्टि करता है कि इस अति विकट समय (१७१८-८३ ई.) के दौरान सिक्ख कौम की उपरोक्त दर्ज चढ़दी कला वाली तेजस्वी स्थिति यथावत् बरकरार रही। यहाँ तक कि सिक्ख कौम का बीज नाश करने पर तुले मीर मन्नू जैसे अति ज़ालिम मुग़ल शासक की भी सिंघों ने अधीनता न स्वीकार की, अपनी अडिगता को डगमगाने न दिया। वे गुरबाणी के इस महावाक्य "जे सुखु देहि त तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई।। जे भुख देहि त इत ही राजा दुख विचि सूख मनाई॥" को अपनी अंतरात्मा और जीवन-व्यवहार में अपनाते हुए, मीर मन्नू द्वारा की जा रही हर सख़्ती को अपने रोज़ाना बढ़ने-फूलने के लिए ईश्वर से प्राप्त रहमत समझते थे। वे दुख व संकट को सिक्खी और सिक्खी आस्था में और निखार आने का तथा प्रफुल्लित होने का कारगर साधन मानते थे, तभी उन दिनों गुरु के सिंघों में यह लोकोक्ति आम प्रचलित थी :

मंनू असाडी दातरी, असीं मंनू दे सोए।
जिउं जिउं मंनू वड्ढदा, असीं दूण सवाए होए।

सहायक पुस्तक :
१. डॉ. गंडा सिंघ कृत सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, १९६९ ई.

विरासत का पहरेदार : सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया

*–स. जैतेग सिंघ अनंत**

सिक्ख कौम के महान जरनैल सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया जी का जन्म ५ मई, सन् १७२३ ई. को लाहौर (पाकिस्तान) में हुआ था। सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया १८वीं सदी के महान नायक, जरनैल और योद्धा थे। वे उच्च व्यक्तित्व किरदार के मालिक, धैर्य की मूर्ति थे।

आप जी के दादा भाई हरदास सिंघ ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से श्री अनंदपुर साहिब में खंडे-बाटे का अमृत छका था और उनकी फ़ौज का हिस्सा रहे थे। श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर हुई जंग में भाई बचित्तर सिंघ ने दुश्मनों के मस्त हाथी का माथा जिस नागनी (बरछा) के साथ बेंधा था, वह नागनी सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया के दादा भाई हरदास सिंघ द्वारा तैयार की गई थी। वे सर्वलोह के हथियार तैयार करने वाले उच्च कोटि के उस्ताद थे। उनके बनाए हथियार पूरे इलाके में मशहूर थे। भाई हरदास सिंघ बाबा बंदा सिंघ बहादुर की फ़ौज में शामिल होकर अपनी बहादुरी और शूरवीरता का प्रदर्शन भी करते रहे।

नामवर इतिहासकार डॉ. किरपाल सिंघ के अनुसार, सिक्खी के महान केंद्र श्री अमृतसर साहिब की भी सरदार जस्सा सिंघ ने बहुत सेवा की। आरंभ में सिक्खों ने श्री अमृतसर साहिब की सुरक्षा के लिए एक कच्चा किला बनवाया, जिसका नाम 'रामरौणी का किला' रखा गया। कुछ समय के बाद इस किले का नाम 'रामगढ़ किला' हो गया। रामगढ़ किले से संबंधित होने के कारण सरदार जस्सा सिंघ खालसा पंथ में 'रामगढ़िया' नाम से प्रसिद्ध हो गए।

सिक्ख कौम के महान विद्वान प्रिंसिपल जोध सिंघ के कथनानुसार— "सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया एक अद्वितीय योद्धा होने के बावजूद सीने में सिक्खी की भावना रखते थे, जिसका परिणाम उनका उच्च सिक्खी आचरण था।" एक अन्य इतिहासकार एवं विद्वान डॉ. प्रिथीपाल सिंघ (कपूर) के अनुसार, "सरदार जस्सा सिंघ एक साधारण कामगार घराने में से उठ कर अपने समय के एक प्रसिद्ध मिसलदार बने। उस समय के हालात में और साधारण साधनों के मुताबिक यह कोई आम प्राप्ति नहीं थी। उन्हें यह सम्मान हासिल है कि वे श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर की पावनता को बरकरार रखने के लिए और इस शहर की सुरक्षा के लिए लगातार कई वर्ष तक लड़ते रहे। रामगढ़ के किले के प्रति स्नेह के कारण उन्हें रामगढ़िया नामक सम्मानजनक पदवी मिली।"

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया सिक्ख कौम की

* सरी, बी. सी., कनाडा, फोन : +१ ७७८३८-५८१४१

बेनज़ीर हस्ती हैं। वे बहुपक्षीय प्रतिभा के मालिक, दूरअन्देशी और रचनात्मिक चरित्र वाले योद्धा थे। उन्हें अपने अमीर विरसे और विरासत का अडिग पहरेदार भी कहा जा सकता है। सिक्ख इतिहास में अगर किसी ने पहली बार इस बात की कद्र जानी कि इतिहास को संभालना कैसे है, आर्काईव्ज कैसे बनाने हैं, म्यूज़ियम कैसे बनाने हैं, वे सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ही थे। १७८३ ई. में दिल्ली का लाल किला फतह करते हुए वे विजय के प्रतीक तौर पर चार तोपें, लाल किले के लाल पत्थर, स्तम्भ और तख़्त-ए-ताऊस की सिल (शिला) उखाड़ कर ले आए। यह सिल श्री अमृतसर साहिब में बुंगा रामगढ़िया में स्थापित की जो आज हमारी कौमी विरासत बन चुकी है। ऐसा कार्य सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया जैसा योद्धा ही कर सकता है।

सिक्ख कौम के महान योद्धा सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया के जीवन-योगदान को याद करते हुए सिक्खों की सर्वोच्च संस्था, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी श्री अमृतसर साहिब, दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, निहंग सिंघ जत्थेबंदियों के अलावा देश-विदेश की सिक्ख संस्थाओं और गुरु नानक-नाम लेवा गुरसिक्ख अपने-अपने यथाबल के अनुसार कुछ न कुछ कार्य कर रहे हैं, परन्तु दुख की बात है कि पंजाब सरकार कुंभकर्णी नींद सोई हुई है। उसे अपनी विरासत की कोई परवाह नहीं। चाहिए यह कि सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया के नाम पर कोई अजायब घर (संग्राहलय), टेक्निकल यूनिवर्सिटी ऑफ जस्सा सिंघ रामगढ़िया, उनकी याद में कॉलेज, विधान सभा पंजाब में उनकी आदमकद तसवीर आदि लगाई जाए। यह संकेत मिले कि सरकार अपने पुरखों और योद्धाओं के प्रति सम्मान की भावना रखती है।

सन् १९७६ में फिरोजशाह ने एंग्लो सिक्ख वार मेमोरियल बनवाया, जिसमें स. जसवंत सिंघ और स. किरपाल सिंघ आर्टिस्ट की बनाईं पेंटिंग्स शोभित की गईं। सन् १९७७ में भारत के प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने श्री अमृतसर साहिब में महाराजा रणजीत सिंघ म्यूज़ियम की स्थापना की थी। पंजाब में राष्ट्रपति-शासन के समय २३ मार्च, १९८० ई. को शहीद भगत सिंघ अजायबघर खटकड़ कलां का उद्घाटन समारोह हुआ। सन् १९८३ में गुरु तेग़ बहादुर सिक्ख अजायबघर श्री अनंदपुर साहिब में स्थापित किया, जिसमें स. किरपाल सिंघ, स. जसवंत सिंघ और स. दविंदर सिंघ आर्टिस्ट की २१ पेंटिंग्स को प्रदर्शित किया गया। फिर कुछ समय बाद लाला लाजपत राय के घर जगरावां में उनकी याद में अजायबघर स्थापित किया गया। शिरोमणि अकाली दल की सरकार के समय पंजाब में बहुत-सी ऐतिहासिक यादगारें स्थापित की गईं। यदि इसी तर्ज़ पर वर्तमान पंजाब सरकार द्वारा सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया यादगारी अजायबघर की स्थापना की जाए तो यह एक स्वर्णिम कार्य होगा। उत्साहित युवाओं के लिए सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया हमेशा एक रौशनी-मीनार हैं।

आध्यात्मिक शक्ति-संपन्न योद्धा : सरदार हरी सिंघ नलूआ

*–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

अफ़ग़ानिस्तान की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों, अफ़ग़ानियों की जुझारू-लड़ाकू प्रवृत्ति और उनकी गुरिल्ला छापामारी की युद्ध-कला के कारण अफ़ग़ानिस्तान पर फतह हासिल करना, हमेशा से ही एक बेहद मुश्किल काम रहा है। पिछले २०० वर्ष से अंग्रेजों, रूसियों और अमेरिकियों ने अफ़ग़ानिस्तान पर कब्जा करने के जितने भी प्रयास किये हैं, वे सभी असफल रहे हैं। ऐसे दुर्जेय अफगानिस्तान के लड़ाकों को उनके घर में शिकस्त देने का कारनामा, आज तक एक ही शक्ति कर सकी है और वो शक्ति है— खालसा। लगभग पौने दो सौ साल पहले शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ के शूरवीर सिपहसालार सरदार हरी सिंघ नलूआ ने यह असंभव-सा लगने वाला कार्य संभव कर दिखाया था।

संघर्ष से भरा हुआ बचपन : सरदार हरी सिंघ नलूआ का जन्म गुजरांवाला (जो अब पाकिस्तान का एक प्रमुख शहर है) में सन् १७९१ ई. में हुआ। आपके पिता का नाम सरदार गुरदयाल सिंघ और माँ का नाम माता धरम कौर था। यह परिवार सिक्खी परंपराओं में रचा-बसा परिवार था, इसलिए सरदार नलूआ को आरंभ से ही गुरसिक्खी वाला माहौल प्राप्त हुआ। आपने प्रारंभिक शिक्षा फारसी के साथ-साथ गुरमुखी में भी प्राप्त की।

सरदार हरी सिंघ अभी मात्र सात वर्ष के ही हुए थे कि इन पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। पिता के निधन ने इन्हें पितृ-प्रेम से वंचित कर दिया। ऐसे मुश्किल समय में सरदार हरी सिंघ ने धीरज नहीं खोया। इन्हें अपने ननिहाल आना पड़ा, परंतु उन्होंने अपनी शिक्षा-साधना में कोई विघ्न नहीं पड़ने दिया। सरदार हरी सिंघ को शस्त्र-संचालन का बड़ा शौक था। इन्होंने पढ़ाई के साथ-साथ शस्त्र-विद्या का अभ्यास भी जारी रखा। समर्पित अभ्यास के कारण युवा होते-होते सरदार हरी सिंघ ने तलवारबाजी, धनुर्विद्या, घुड़सवारी, नेजेबाज़ी आदि में गजब की महारत हासिल कर ली।

महाराजा रणजीत सिघ के साथ भेंट : बसंत ऋतु के अवसर पर महाराजा रणजीत सिंघ लाहौर में एक खास शानदार दरबार

* *१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना—१४११०१, फोन : ६२३९६-०१६४१*

सजाया करते थे। इस दरबार में दूर-दूर से आने वाले लोग अपनी कला के जौहर दिखाया करते थे। सन् १८०५ ई. के बसंत-दरबार के अवसर पर युवा सरदार हरी सिंघ ने अपने अनुपम युद्ध-कौशल के ऐसे-ऐसे करतब दिखाये कि देखने वाले दंग रह गये। महाराजा रणजीत सिंघ इस १४-१५ वर्षीय युवक के रण-कौशल से इतने प्रभावित हुए कि उसे उसी समय सिक्ख फौज के लिए चुन लिया।

'नलूआ' खिताब की प्राप्ति : सिक्ख सेना में आकर सरदार हरी सिंघ ने बड़ी तेज़ी से तरक्की की। महाराजा उन्हें अपने करीबी योद्धाओं में रखने लगे। एक बार महाराजा शिकार खेलने गये। सरदार हरी सिंघ साथ थे। शिकार के दौरान अचानक एक शेर सामने पड़ गया। बहादुर सरदार हरी सिंघ ने दिलेरी दिखाते हुए शेर को मार डाला। महाराजा बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने हरी सिंघ को 'नलूआ' (कुछ इतिहासकारों के अनुसार 'नलवा') का खिताब प्रदान किया। कहते हैं, राजा नल शेर मारने में बड़े कुशल थे। सरदार हरी सिंघ ने उसी तरह शेर का वध किया था, इसलिए उन्हें 'नलूआ' कहा गया। 'नलूआ' यानी 'नल जैसा'।

सरदार नलूआ की अद्वितीय वीरता और पराक्रम : सिक्ख सेना में आकर सरदार हरी सिंघ नलूआ अपनी योग्यता के बल पर जरनैल के पद पर पहुँचे । उनके जंगी कारनामों की सूची बहुत लंबी है।

सन् १८०७ में कसूर के युद्ध में सरदार नलूआ ने अपनी बहादुरी के नायाब जौहर दिखाये । सन् १८१० ई. में सरदार नलूआ ने सियालकोट पर आक्रमण किया। पहले दो दिनों तक सिक्ख सेना कोई खास कार्रवाई न कर सकी। तीसरे दिन सरदार हरी सिंघ नलूआ सेना को उत्साहित करते हुए खालसा राज का झंडा पकड़ कर आगे बढ़े। पलक झपकते ही दीवार फांद कर क़िले के ऊपर जा चढ़े और झंडा लहरा दिया। सरदार नलूआ की बहादुरी देख कर फौज जोश में आ गई और किला फ़तह कर लिया गया। इसी वर्ष मुलतान की जंग में सरदार नलूआ जख्मी हो गये परन्तु शीघ्र स्वस्थ होकर लौट आये।

सरदार नलूआ ने १८१३ ई. में हज़रो के युद्ध में अफ़गानों को हराया। १८१५ ई. में राजौरी और चिनाब-तट के इलाकों को जीता । १८१८ ई. में कुंवर खड़क सिंघ के साथ मुलतान पर आक्रमण किया और उसे पक्के तौर पर सिक्ख राज्य में मिला लिया। १८१९ ई. में कश्मीर को फ़तह किया और वहाँ पर पिछले ५०० वर्ष से चली आ रही मुस्लिम-सत्ता का अंत कर दिया।

नवंबर, १८२१ ई. में एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना घटित हुई। सरदार हरी सिंघ नलूआ ७००० सैनिकों और बड़े ख़जाने के साथ मुजफ्फराबाद के रास्ते लाहौर वापस आ रहे थे। हज़ारा के निकट मंगली दर्रे पर ३०००० के शत्रु लश्कर ने इन्हें रोका और चुंगी देने के लिए कहा। सरदार नलूआ ने उन्हें समझाने की कोशिश की, पर वे न माने। अंतत: युद्ध छिड़ गया। सरदार नलूआ ने महज ७००० सैनिकों के साथ ३०००० के लश्कर को खदेड़ दिया और लगभग २००० अफ़गानों को मौत के घाट उतार दिया।

यही नहीं, अटक, नौशहरा, पेशावर जैसी अन्य कई मुहिमों में सरदार हरी सिंघ नलूआ ने अद्वितीय वीरता दिखाई। इसमें कोई शक नहीं कि सरदार नलूआ के विजय-अभियान ने सिक्ख राज्य की स्थापना और विस्तार में विशेष भूमिका निभाई।

कुशल प्रशासक : सरदार हरी सिंघ नलूआ अत्यंत बुद्धिमान, तीक्ष्ण बुद्धि एवं गंभीर प्रवृत्ति के मालिक थे। अपने इन्हीं गुणों के कारण इन्होंने महाराजा के हृदय में गहरी जगह बना ली थी। अपनी दूरदर्शिता के कारण ये महाराजा के खास विश्वासपात्र बन गये। महाराजा राज्य संबंधी अहम मामलों में इनसे मशविरा अवश्य लेते थे।

महाराजा रणजीत सिंघ सरदार नलूआ की प्रशासनिक योग्यता के भी कायल थे। १८१९ ई. की कश्मीर-फ़तह के बाद महाराजा ने इन्हें कश्मीर का गवर्नर नियुक्त कर दिया। इस ज़िम्मेदारी को इन्होंने बड़ी योग्यता से निभाया।

१८२१ ई. में हज़ारा की बड़ी जीत के बाद सरदार नलूआ को हज़ारा का गवर्नर बनाया गया। यहां इन्होंने 'हरीपुर' नामक शहर बसाया और 'किशनगढ़' नामक किला बनवाया।

सरदार हरी सिंघ नलूआ पेशावर के पहले सिक्ख गवर्नर बने। औरंगजेब के समय से यहाँ के हिंदू 'जजिया' कर देते आ रहे थे। सरदार नलूआ ने उसे तुरंत समाप्त कर दिया।

सरदार नलूआ के कुशल प्रशासन में पेशावर की आमदनी कई गुना बढ़ गई। महाराजा ने प्रसन्न होकर इन्हें अपने नाम का सिक्का जारी करने की आज्ञा दी।

पेशावर का कबीलाई इलाक़ा तब भी बड़ा अशांत इलाका होता था। कबीलाई किसी कानून को नहीं मानते थे। सरदार हरी सिंघ नलूआ ने इस अराजक क्षेत्र में कानून-व्यवस्था कायम की। इन इलाकों के लोग सरदार नलूआ के नाम से थर्राने लगे थे। कहते हैं कि माताएं अपने बच्चों को 'नलवा रागले' (नलूआ

आया) कह कर डराया करती थीं।

जमरौद का युद्ध : पिछले आठ सौ वर्ष से पंजाब विदेशी हमलावरों का पायदान बना हुआ था। हमलावर खैबर के दर्रे से भारत में प्रवेश करते थे। सरदार नलूआ जानते थे कि खैबर पर कब्ज़ा करके ही आक्रमणकारियों का प्रवेश रोका जा सकता है। सरदार नलूआ की यह मुहिम उन अफ़ग़ानियों के विरुद्ध थी जिन्हें हराना लगभग असंभव माना जाता था। इस जबरदस्त मुहिम में सरदार हरी सिंघ नलूआ ने जमरौद पर कब्ज़ा करके न सिर्फ़ अफ़ग़ानियों को हराया बल्कि उनमें मानसिक तौर पर भी ऐसा ख़ौफ़ भर दिया कि वे इस ओर आँख उठाने से भी डरने लगे।

सरदार नलूआ की शहादत : सन् १८३७ में एक बड़ी अफगान फौज ने जमरौद पर आक्रमण कर दिया। सरदार नलूआ अस्वस्थ थे और पेशावर में स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त कर रहे थे। जमरौद पर हमले की सूचना प्राप्त होते ही सरदार साहिब ६००० पैदल, १००० घुड़सवार और १८ तोपें लेकर तुरंत जमरौद पहुँचे। सरदार नलूआ के आने की खबर सुन कर अफ़ग़ानों के हौसले पस्त हो गये। वे यह सोचकर आये थे कि सरदार नलूआ बीमार हैं, अत: लड़ने नहीं आ पाएंगे। मगर, सब कुछ उल्टा हो गया। सिक्ख फौज के जबरदस्त हमले ने अफगानों के पैर उखाड़ दिये। उनकी प्रसिद्ध तोप 'कोह-सथन' (पहाड़-तोड़) समेत कई तोपें सिक्खों ने अपने कब्जे में ले लीं।

इस युद्ध में सरदार नलूआ एक अन्य सिपहसालार सरदार निधान सिंघ के जत्थे की रक्षा करते हुए दर्रे के अंदर शत्रु की गोलियों से जख्मी हो गये। जमरौद के किले में कुछ दिन संघर्ष करने के बाद अपनी नाजुक हालत के मद्देनज़र सरदार नलूआ ने अपने सालारों को बुलाया और खालसे की चढ़दी कला के लिए अंतिम साँस तक जूझने की ताक़ीद की।

अन्तत: ३० अप्रैल १८३७ ई. की रात को सरदार हरी सिंघ नलूआ शहीदी प्राप्त कर गये।

सरदार हरी सिंघ नलूआ वास्तव में एक महान् आध्यात्मिक व्यक्तित्व थे। उन्होंने जितने भी युद्ध लड़े, वे खालसे की चढ़दी कला के लिए लड़े। यह उनकी आध्यात्मिक शक्ति का प्रभाव ही था कि वे असंभव से असंभव युद्ध में भी हमेशा विजयी रहे।

सिक्ख इतिहास का गौरवशाली दिवस : सरहिंद फ़तह दिवस

*–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर' **

शूरवीर योद्धा और पराक्रमी बाबा बंदा सिंघ बहादुर के बारे में इतिहासकार डॉ. हरि राम गुप्ता लिखते हैं — "जिस निडर, बहादुर सिक्ख योद्धा ने गुलामी की जंज़ीरें तोड़ते हुए मुग़लों को पहली बार भारत के रणक्षेत्र में पराजित कर हार का मजा चखाया, उस महान सिक्ख, बलशाली योद्धा का नाम बाबा बंदा सिंघ बहादुर है। उसने पहली बार मुग़लों को सिक्खों की संगठन-शक्ति का एहसास करवाया और उनके अपराजित होने के घमंड को तोड़ डाला।"

अंग्रेज़ इतिहासकार मैकलेगर, बाबा बंदा सिंघ बहादुर के बारे में लिखता है— "बाबा बंदा सिंघ बहादुर योद्धाओं व जरनैलों में उच्च कोटि का स्थान रखता है। उसका नाम पंजाब में तथा पंजाब से बाहर मुग़लों में दहशत (खौफ) पैदा करने के लिए काफ़ी था।"

ऐतिहासिक तथ्य गवाही देते हैं कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर सिक्ख इतिहास के अद्वितीय नायक, अति बहादुर, निडर और साहसी सेनापति हुए हैं। उन्होंने महमूद गजनवी, तैमूर लंग तथा बाबर के खानदान से संबंधित बादशाहों की शानो-शौकत को मिट्टी में मिलाकर रख दिया।

संप्रभुता-संपन्न एवं स्वतंत्र सिक्ख साम्राज्य के संस्थापक और मुग़लों के दमन व अत्याचारों के विरुद्ध तेग उठाने वाले निर्भीक, शूरवीर, बहादुर योद्धा बाबा बंदा सिंघ बहादुर का जन्म २७ अक्तूबर, १६७० ई. को जम्मू-कश्मीर के पुंछ ज़िला के गांव राजौरी में पिता श्री रामदेव तथा माता सुलक्खणी देवी के घर हुआ। उनका परिवार एक साधारण कृषक परिवार था। उनके बचपन का नाम लछमण दास था। वे १५ वर्ष की आयु में घर छोड़कर बैरागी साधु बन गए थे। वे बहुत कोमल स्वभाव, उदार वृत्ति एवं प्रसन्नचित्त स्वभाव के मालिक थे।

एक गर्भवती हिरनी का शिकार करने के बाद उनका हृदय-परिवर्तन हुआ।

उन्होंने नया नाम 'माधोदास' धारण कर

* बी.एक्स–९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर, फोन : ९८७२२-५४९९०

लिया। अलग-अलग स्थानों की यात्रा करने के बाद माधोदास ने महाराष्ट्र के जिला नांदेड़ के निकट गोदावरी नदी के किनारे, एक शांत व सुंदर स्थान पर अपना आश्रम बना लिया। इसी स्थान पर ही ३ सितंबर, १७०८ ई. को उनकी भेंट श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ हुई। गुरु जी के दर्शन-दीदार कर माधोदास धन्य हो उठे। गुरु जी के जीवन-आदर्शों, महान कुर्बानियों एवं महान विचारों व इरादों ने माधोदास की विचारधारा ही बदल डाली। "गुरु जी, मैं तो आपका बंदा (शिष्य) हूं" कहने पर और गुरु जी के चरणों पर शीश झुकाने पर गुरु जी ने उन्हें अपना शिष्य, सिक्ख, बंदा बना लिया और उन्हें अमृत की दाति प्रदान कर 'माधोदास' से 'बंदा सिंघ' बना दिया। उनके नाम के साथ 'बहादुर' शब्द एक पदवी के तौर पर लगाया गया था।

ज़ालिम व क्रूर मुग़ल शासकों के अत्याचारों को खत्म करने तथा उन्हें कड़ा सबक सिखाने के लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर को खालसा पंथ का जत्थेदार नियुक्त कर पंजाब की ओर भेजा। गुरु जी ने अपने तरकश में से पांच तीर, एक निशान साहिब और एक नगाड़ा देकर उन्हें आदेश दिया कि वे पंजाब में जाएं, सिक्खों का नेतृत्व करें। भाई बाज सिंघ, भाई विनोद सिंघ एवं भाई काहन सिंघ सहित पांच मुख्य सिंघ और २० अन्य जांबाज़ सिंघ बाबा जी के साथ रवाना किए गए। यह रवानगी अक्तूबर, १७०८ ई. में हुई थी। इसी के साथ ही सिक्ख इतिहास का और खालसा पंथ की चढ़दी कला (उन्नत अवस्था) का नया दौर शुरू हुआ। बाबा जी की आगवानी में केवल २५ सिंघों के जत्थे को शक्तिशाली मुग़ल सरकार से टक्कर लेने हेतु पंजाब की ओर रुख्सत करना दशमेश पिता जी का एक और अद्भुत कारनामा था, चोज था, कौतुक था।

नांदेड़ से दिल्ली तक बाबा बंदा सिंघ बहादुर के साथ थोड़े-से ही सिंघ थे। रोहतक-सोनीपत के क्षेत्र में प्रवेश करने पर सिंघों की फ़ौज में वृद्धि हुई। यहां सहेरी-खंडा नामक दो जुड़वां गांवों में रुककर आगामी रणनीति तैयार की गई। यहीं पर से बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने गुरु दशमेश पिता जी द्वारा सिक्खों के नाम लिखे गए हुकमनामे (आदेश-पत्र) पंजाब में भेज दिए। इनमें लिखा गया था कि सिक्ख बाबा बंदा सिंघ बहादुर के साथ मिलकर मुग़लों के विरुद्ध संघर्ष तेज़ कर दें। बाबा जी ने अपनी ओर से भी संदेश भेज दिया कि वे सरहिंद के जालिम सूबेदार वजीर खान को सबक सिखाने

हेतु आ रहे हैं, जिसने गुरु जी के दो छोटे साहिबजादों— बाबा जोरावर सिंघ जी तथा बाबा फतहि सिंघ जी को दीवारों में जिंदा चिनवाकर शहीद किया था और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पर गुप्त हमला करने के लिए दो पठानों— जमशेद खान एवं वासिल बेग को नांदेड़ भेजा था।

गुरु जी के हुकमनामें और बाबा बंदा सिंघ बहादुर का संदेश मिलते ही सारी सिक्ख कौम जोश-ओ-जज़्बा से उठ खड़ी हुई। दिवंगत ज्ञानी भजन सिंघ अपनी पुस्तक 'साडे शहीद' में लिखते हैं — "माझा व मालवा के क्षेत्र उमड़ पड़े। सभी लोगों ने हथियार उठा लिए हों और वे सरहिंद पर धावा बोलने के लिए चल पड़े। भाई फतहि सिंघ, भाई नगीरा सिंघ, भाई माली सिंघ, भाई आली सिंघ, चौधरी राम सिंघ तथा भाई तरलोक सिंघ अपने-अपने जत्थे लेकर गुरु जी की खुशियां प्राप्त करने के लिए आ गए।"

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने पंजाब पहुंचकर अपने साथियों के साथ सबसे पहले कसबा समाणा पर धावा बोला और अपनी जंगजू उपस्थिति जोरदार ढंग से दर्ज करवाई। यहां की रियासत के नौकर जल्लाद जलालुद्दीन ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब को चांदनी चौक, दिल्ली में शहीद किया था, अत: उसे मौत के घाट उतार दिया।

समाणा के बाद घुड़ाम, ठसका, शाहबाद, मुस्तफाबाद, कपूरी, साढौरा, छत बनूड़ आदि मुगलों के केंद्रों को बाबा जी ने अपने अधीन कर लिया। साढौरा के निर्दयी शासक उसमान खान ने प्रजा पर बहुत अत्याचार किए थे। उसने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की मदद करने के कारण पीर बुद्धू शाह जी को शहीद किया था, इसलिए उसे भी कड़ा सबक सिखाया गया।

फिर सरहिंद पर बड़े जोरदार ढंग के साथ धावा बोलने के लिए आगे बढ़ते गए। बाबा बंदा सिंघ बहादुर में जोश, जज्बा, बहादुरी, साहस, युद्ध-कौशल, रणनीतिक सूझबूझ, दृढ़ता की कोई कमी नहीं थी। माझा, दोआबा तथा मालवा क्षेत्रों से बहुत-से सिंघ रणभूमि-कर्मभूमि में पहुँच गए। मुकाबला करने के लिए सरहिंद के नवाब वजीर खान ने आसपास के शासकों की सेना बुला ली। जो आदमी क्रूर, जालिम और पापी हो, वह निडर व वीर होने का दिखावा भले ही करता रहे, मगर अंदर से वह भीरू होता है। वज़ीर खान की हालत भी ऐसी ही बन चुकी थी।

१२ मई, १७१० ई. को चप्पड़चिड़ी के जंगे-मैदान में जांबाज़ सिंघों और दुष्ट मुग़लों के

दरमियान घमासान युद्ध शुरू हो गया। इस युद्ध में वज़ीर खान का सीधा मुकाबला भाई बाज सिंघ के साथ हुआ। फिर जोश से भरे हुए भाई फतहि सिंघ भी वहां पहुंच गए। उन्होंने झपटकर कृपाण द्वारा वज़ीर खान का सिर धड़ से अलग कर दिया। बिना पानी मछली की भाँति वज़ीर खान का शरीर तड़प-तड़पकर ठंडा हो गया। इस युद्ध में सिंघों ने उसके छोटे पुत्र एवं दामाद को भी मौत के घाट उतार दिया। 'जैसी करनी, वैसी भरनी।'

वजीर खान की मौत के बाद मुग़ल सेना के हौसले पस्त हो गए। वो जंग का मैदान छोड़कर भाग खड़ी हुई। पापी सुच्चानंद भी मारा गया। यह ऐतिहासिक, निर्णायक और घमासान युद्ध सरहिंद शहर से लगभग दस मील दूर हुआ था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के कुशल नेतृत्व में सिंघों ने इस युद्ध में विजय प्राप्त की और अपने रहबर दशमेश पिता जी की खुशियां प्राप्त की। इस लाजवाब, लासानी, शानदार, ऐतिहासिक फ़तह को 'सरहिंद फतह दिवस' के रूप में आज भी मनाया जाता है।

१४ मई, १७१० ई. को रणबांकुरे सिंघ सरहिंद में दाखिल हुए। सिंघों ने सरहिंद शहर की ईंट से ईंट बजा दी। भाई बाज सिंघ को सरहिंद का सूबेदार नियुक्त कर दिया गया। भाई आली सिंघ को नायब सूबेदार लगाया गया। भाई फ़तहि सिंघ को समाणा तथा भाई राम सिंघ को थानेसर (कुरुक्षेत्र) का मुख्य प्रबंधक नियुक्त किया गया। सरहिंद पर फ़तह हासिल होने के बाद शेष छोटे-छोटे मुग़ल शासकों ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर की अधीनता स्वीकार कर ली। इस गौरवशाली फ़तह के ज़लज़ले, कारनामे ने मुगल सरकार की नींव हिलाकर रख दी। करनाल से लुधियाना तक बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सरकार स्थापित हो गई। सरहिंद- फतह का इतना अच्छा प्रभाव पड़ा कि हजारों हिंदू तथा मुसलमान अपने आप सिंघ सज गए। बाबा जी तथा ज़ालिम औरंगज़ेब की शख्सियत में उल्लेखनीय व ऐतिहासिक अंतर नज़र आता है कि किसी को भी बलपूर्वक या डराकर सिंघ नहीं सजाया गया। बाबा जी ने सात सौ वर्ष से के पैरों में पड़ी गुलामी की बेड़ियों, गले में पड़ी गुलामी की जंज़ीरों को तोड़ डाला।

अपने उत्कर्ष काल के दौरान बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने स्वतंत्र सिक्ख राज्य की घोषणा कर दी। उन्होंने साढौरा के नज़दीक स्थित मुखलिसपुर को अपना मुख्यालय बनाया और श्री गुरु नानक देव जी एवं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर नए सिक्के व मोहर जारी कर दी।

सरहिंद की फ़तह के दिन से नया साल व संवत् भी शुरू किया गया। ज़मींदारी (जागीरदारी) व्यवस्था को खत्म कर हलवाहकों (किसानों) को ही ज़मीनों के मालिक बना दिया तथा बंधुआ-प्रणाली का अंत कर दिया। लोगों में आत्मसम्मान व आत्मविश्वास बढ़ाया।

फिर पंजाब से बाहर निवासित आम जनता पर जुल्म ढाने वाले शासकों को सबक सिखाने एवं सज़ा देने का काम शुरू कर दिया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने यमुना नदी के पार जलालाबाद को फतह करने के बाद सहारनपुर पर कब्जा कर लिया। बिहार के पीरजादा को पार बुलाया। उनकी विजयों का सिलसिला निरंतर जारी रहा और लाहौर से लेकर सहारनपुर तक स्वतंत्र व सार्वभौमिक तथा संप्रभुतासंपन्न सिक्ख राज्य का परचम (खालसा राज्य का झंडा) फहरा दिया।

बाबा जी केवल शूरवीर योद्धा ही नहीं थे, बल्कि वे लोकसेवक, क्रांतिकारी, प्रजा-पालक भी थे। उन्होंने निर्धनों-गरीबों को अपनी सरकार में ऊंचे पदों पर तायनात कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के इस फ़लसफ़े "इन ग़रीब सिक्खन को देऊं पातशाही। याद करें हमरी गुरिआई" को अमली जामा पहनाया। उनके इस कार्य को हमेशा याद रखा जाएगा, जो कि उन्होंने भूमि बंदोबस्त (जमींदारा-प्रबंध) में सुधार कर भूमिहीन किसानों को ज़मीनों के मालिक बनाया। काश! मौजूदा सरकारें भी भूमिहीन मज़दूरों व कृषकों को ज़मीनों के मालिक बनाने का शुभ व कल्याणकारी कार्य कर दिखाएं।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने पुन: अपने सैन्य बल को संगठित किया और कई क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया। मार्च १७१५ ई. में कलानौर तथा बटाला पर भी कब्ज़ा कर लिया। आखिर वे अपने सैनिकों सहित गुरदास नंगल की 'कच्ची गढ़ी' में मुगल सेना के घेरे में घिर गए। यह घेरा कई महीनों तक जारी रहा। फिर ७ दिसंबर, १७१५ ई. को शाही फ़ौज ने गढ़ी पर कब्ज़ा कर लिया। बाबा जी को ८०० सिक्खों सहित कैद कर पहले लाहौर ले जाया गया। फिर उन्हें एक जुलूस की शक्ल में २७ फरवरी, १७१६ ई. को दिल्ली ले जाया गया। बाबा जी की पत्नी व उनके चार वर्षीय पुत्र अजै सिंघ को भी शहीद कर दिया गया। बंदी सिक्खों को शहीद करने के बाद बाबा बंदा सिंघ बहादुर को यात्नाएं देकर शहीद कर दिया गया।

गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब का शहीदी साका

*–स. रणधीर सिंघ**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पावन चरणों का स्पर्श प्राप्त यमुना के किनारे सुशोभित पवित्र ऐतिहासिक स्थान गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब को महंतों से आज़ाद करवाने के लिए और श्री दरबार साहिब की पवित्रता को मुख्य रखते हुए मिसल शहीदां तरुणा दल हरियां वेलां के प्रथम प्रमुख जत्थेदार बाबा हरभजन सिंघ तथा जत्थेबंदी के वर्तमान जत्थेदार जिंदा शहीद बाबा निहाल सिंघ हरियां वेलां के नेतृत्व में आरंभ की गई १०१ श्री अखंड पाठ साहिब की श्रृंखला को अखंड रखने के लिए २२ मई, १९६४ ई., दिन मंगलवार को जत्थेबंदी के ग्यारह निहंग सिंघ शहादत प्राप्त कर गए थे।

गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब हिमाचल प्रदेश के ज़िला सिरमौर के श्री पाउंटा साहिब नगर में सुस्थित है, जो कि नाहन से ४० किलोमीटर की दूरी पर है। यहाँ के राजा मेदनी प्रकाश के आग्रह पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ५०० सिक्ख योद्धाओं सहित सर्वप्रथम नाहन में १७ बैसाख, १७४२ बिक्रमी को अपने मुबारक चरण धरे। यहाँ पर आप जी की पवित्र याद में बहुत ही भव्य गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है।

नाहन रियासत से चलकर दसम पातशाह, यमुना नदी के तट पर राजा मेदनी प्रकाश सहित पहुँचे। अति रमणीय व शांतमयी एकांत स्थान पसंद कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने यमुना नदी के किनारे 'महान कोश' के कर्ता भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार, माघ की संक्रांति, संवत् १७४२ बिक्रमी ई. को बाबा बुड्ढा जी के वंशज भाई गुरबखश सिंघ से श्री पाउंटा साहिब नगर की बुनियाद रखवाई। अरदास सतिगुरु जी के दीवान, भाई नंद चंद ने की। ऐतिहासिक साक्ष्य के अनुसार, सतिगुरु जी ने इस स्थान का निर्माण-कार्य कुछ दिनों में ही मुकम्मल करवा लिया था। श्री अनंदपुर साहिब से गुरु जी के साथ माता गुजरी जी, माता जीतो जी, माता सुंदरी जी, भाई नंद लाल जी, भाई घन्हईआ जी, बाबा हरदास जी, भाई जैता जी, भाई मनी सिंघ जी इत्यादि सिक्ख सेवक थे। सिक्ख विद्वान भाई संतोख सिंघ, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के इस स्थान पर सुस्थित होने से सम्बंधित अपनी मुबारक कलम द्वारा इस प्रकार लिखते हैं :

पांव टिकयो सतिगुरू के अनंद पुरि ते आइ।
नाम धरयो तिस पांवटा सभि देसनि प्रगटाइ।

दशम पातशाह ने श्री अनंदपुर साहिब की सेवा-संभाल, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पोते और बाबा सूरज मल्ल के पुत्र भाई गुलाब राय तथा

* *मिसल शहीदां तरुणा दल, हरियां वेलां (इंग्लैंड) फ़ोन : ७४१७४-४३३००*

भाई शाम दास के सुपुर्द करने के बाद इस पवित्र स्थान को प्रकट किया।

गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब नामक पवित्र ऐतिहासिक स्थान अपने अंदर गौरवमयी तथा रक्त-रंजित घटनाओं की यादें संभाले हुए है। ऐतिहासिक हवालों और स्रोतों के अनुसार, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भक्ति और शक्ति के धारक संत-सिपाही तथा स्वतंत्र व संपूर्ण मानव अर्थात् खालसा पंथ की सृजना से पूर्व। श्री पाउंटा साहिब नामक पवित्र स्थान का भाग्योदय किया। दशमेश पिता जी ने यमुना नदी के किनारे ऐतिहासिक साहित्य की रचना की, ५२ कवियों का संरक्षण किया, कवि चंदन और राजकवि मंगल को अति सम्मान प्रदान किया। इस पवित्र स्थान पर बड़े साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी का जन्म हुआ।

'शहीद बिलास' कृत भाई मनी सिंघ जी तथा पुरातन ग्रंथ 'श्री गुर कथा' के अनुसार भाई कल्याण के बेटे भाई सुख भान के पड़पोते, भाई जस्स के पोते और भाई सदानंद के पुत्र भाई जंता का विवाह भाई खजान सिंघ रिआड़ निवासी पट्टी परगना निवासी की सुपुत्री राज कौर के साथ इस पवित्र स्थान पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की हज़ूरी में हुआ। यहाँ पर सुशोभित होकर सतिगुरु जी ने यहाँ से ग्यारह किलोमीटर की दूरी पर स्थित भंगाणी साहिब ऐतिहासिक स्थान पर १८ सितम्बर, १६८८ ई. को बाईधार पहाड़ी राजाओं एवं मुग़ल सेना के साथ पहला युद्ध किया। कलगीधर पिता जी की इस युद्ध में फ़तह हुई। राजकवि सैनापति अपनी रचना 'श्री गुर सोभा' में लिखता है :

जीत संग्राम आनंद मंगल भयो,
आन गोबिंद गुन सबनि गाए।
धंनि हो धंनि प्रभु नाम तुमरो लीओ,
दुष्ट को जीत डंका बजाए। ४८ ।।८९ ।।

इसी पवित्र स्थान पर खुदा की बंदगी करने वाले साढौरा शहर के निवासी पीर बुद्धू शाह (सईअद शाह बदर-उद-दीन) के अपने पुत्रों, भाई और सेवकों (मुरीदों) ने (भंगाणी की जंग) में भाग लिया और शहादत प्राप्त की। गुरु जी ने प्रसन्न होकर अपने केशों सहित कंघा व सिरोपाउ प्रदान कर पीर जी को सम्मानित किया।

जत्थेदार बाबा निहाल सिंघ हरियां वेलां के अनुसार, गुरु जी जब भंगाणी साहिब को वापस लौटे तो उस समय इस पवित्र स्थान की सेवा-संभाल करने के लिए साथ आए भाई बिशन सिंघ को यहाँ पर रहने की आज्ञा प्रदान की। इनके बाद श्री पाउंटा साहिब के शहीदी साके तक २७६ वर्ष तक उनकी संतान ही सेवा निभाती रही।

देश के बटवारे के बाद मिसल शहीदां तरुणा दल हरियां वेलां के प्रमुख जत्थेदार बाबा हरभजन सिंघ और बाबा निहाल सिंघ १९५१ ई. से कई बार गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब के दर्शनार्थ निहंग सिंघों के दल सहित आए। उस समय इस पवित्र स्थान का प्रबंध एक पुरखी और महंती प्रबंध चला रहा था। उस समय यहाँ का महंत गुरदयाल सिंघ था, जो कि गुरु-घर की स्थापित मर्यादा की कदम-

कदम पर उल्लंघना कर रहा था। निकटवर्ती गाँव भुंगरनी तथा पाकिस्तान से आकर देश-विभाजन के समय यहाँ पर आकर बसे श्रद्धेय सिक्ख, महंत से बहुत दुखी थे। जत्थेदार बाबा चेत सिंघ छियानवे करोड़ी प्रमुख शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल के साथ गुरमता पारित कर जत्थेदार हरभजन सिंघ, होला-महल्ला श्री अनंदपुर साहिब और गुरुद्वारा अजीतगढ़ साहिब में मना कर दल सहित १० मार्च, १९६४ ई. को गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब में पहुँच गए। निहंग सिंघों के दल की आमद के सम्बंध में महंत को पहले ही सारी जानकारी मिल चुकी थी, जिस कारण महंत ने सरकारे-दरबारे सबके साथ सम्पर्क साध लिया था। बाबा हरभजन सिंघ ने मौजूदा जत्थेदार बाबा निहाल सिंघ के साथ गुरमता पास कर श्री दरबार साहिब की पवित्रता को मुख्य रखते हुए २४ चैत्र, २०२१ बिक्रमी (५ अप्रैल, १९६४ ई.) को इलाका निवासी संगत के सहयोग द्वारा श्रृंखलाबद्ध १०१ श्री अखंड पाठ साहिब आरंभ करवा दिए। जिस दिन शहीदी साका घटित हुआ, उस दिन २२ मई, १९६४ का ई. दिन था। उस दिन २२ श्री अखंड पाठ साहिब का भोग पड़ चुका था। २३वां श्री अखंड पाठ साहिब आरंभ था। दरबार में लगभग १५ निहंग सिंघ उपस्थित थे। पुलिस खिड़कियाँ-दरवाज़े तोड़ कर अंदर दाख़िल हो गई। डी. सी. मिस्टर आर. के. चंडेल ने पुलिस को निहंग सिंघों पर गोली चलाने का हुक्म कर दिया जिस कारण मौके पर ही ग्यारह निहंग सिंघ शहादत प्राप्त गए और जत्थेदार बाबा निहाल सिंघ तीन सिंघों सहित गंभीर रूप से घायल हो गए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप पर भी गोलियाँ लगीं। बाबा निहाल सिंघ उस समय चँवर की सेवा निभा रहे थे। इनके भी तीन गोलियाँ लगी थीं। दरबार में ख़ून ही ख़ून बह रहा था। गुरु महाराज जी का पावन स्वरूप, रुमाले, दरियां आदि ख़ून से लथपथ थे। दो सिंघों द्वारा यमुना पार कर देहरादून और दिल्ली पहुँच कर सारी ख़बर दी गई। इस ख़ूनी साके की ख़बर पंजाब के कोने-कोने में जंगल की आग की तरह फैल गई। पूरे सिक्ख जगत में आक्रोश की लहर दौड़ गई। गुरु-पंथ के महान शहीद शहादत देकर गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब को महंत की अपवित्र जकड़ में से आज़ाद करवा कर, गौरवमयी इतिहास सृजित कर गए। यह हम सभी के लिए प्रेरणा-स्रोत व गौरवमयी इतिहास है।

आज आवश्यकता है उन महान शहीद योद्धाओं से प्रेरणा लेकर, अमृत की दाति प्राप्त कर गुरु वाले बनने की। महान शहीदों की सालाना याद २० मई को ऐतिहासिक स्थान गुरुद्वारा श्री गुपतसर साहिब भुंगरनी (हिमाचल प्रदेश) और २२ मई को गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब में पंथक जत्थेबंदी मिसल शहीदां तरुणा दल हरियां वेलां के प्रमुख बाबा निहाल सिंघ के नेतृत्व में प्रत्येक वर्ष मनाई जाती है। श्री पाउंटा साहिब गुरुद्वारा की प्रबंधक समिति तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी व संगत के सहयोग द्वारा इस वर्षगांठ पर गुरमति समारोह का आयोजन किया जाता है।

किरत की महत्ता

*–स. परमजीत सिंघ सुचिंतन**

'किरत' का भावार्थ है— मेहनत करके, ईमानदारी से अपनी आजीविका का प्रबन्ध करना। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा दिए गए प्रमुख सिद्धांत— 'किरत करो, नाम जपो व वंड छको' में 'किरत' करने को प्राथमिकता दी गई है। 'किरत' के समानांतर शब्द श्रम, मेहनत, परिश्रम आदि हैं।

भूमिका : किरत करना, हर मनुष्य के जीवन का एक महत्वपूर्ण कर्त्तव्य होता है। यह केवल पेट भरने का साधन ही नहीं बल्कि आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने का माध्यम भी है। मनुष्य के जीवन में आर्थिक स्थिरता और सामाजिक सुरक्षा के लिए किरत करना अत्यन्त आवश्यक है।

मनुष्य को अपने जीवन-यापन के लिए भोजन, कपड़ों और आवास (मकान) की आवश्यकता होती है। किरत करने से ही हमारी सभी भौतिक आवश्यकताएँ पूरी होती हैं।

किरत करना केवल व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने तक सीमित नहीं है बल्कि यह समाज में व्यक्ति की पहचान भी तय करता है। जो व्यक्ति आत्मनिर्भर होता है और अपने परिवार का भरण-पोषण अच्छे से कर सकता है, वह समाज में सम्मान प्राप्त करता है।

किरत करने के साधन : समय के साथ रोज़गार के साधन बदलते रहे हैं। किरत करने के कुछ प्रमुख तरीके, मूल रूप से आज भी प्रासंगिक हैं। रोजगार के ये साधन निम्नलिखित अनुसार दिए गए हैं :—

कृषि एवं पशुपालन : भारत जैसे कृषि प्रधान देश में, प्राचीन समय से ही कृषि और पशुपालन व्यवसाय लोगों के लिए आजीविका का मुख्य स्रोत रहे हैं। आज भी करोड़ों किसान और ग्रामीण परिवार खेतों में काम करके व पशुपालन द्वारा अपने परिवार का पालन-पोषण करते हैं। भारत व्यवसाय देश में यह एक महत्वपूर्ण आजीविका का साधन है।

श्रम और मजदूरी : जो लोग ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं होते, वे निर्माण-कार्यों, कारखानों, ईंट-भट्टों, खदानों आदि में मजदूरी करके, अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं। मजदूरों का कार्य कठिन होता है लेकिन उनकी मेहनत से ही समाज का विकास संभव होता है। मजदूरी, निर्माण-कार्य और कारखानों में काम करके करोड़ों लोग अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं।

व्यापार एवं स्वरोजगार : कुछ लोग दूसरों के अधीन काम करने की बजाय खुद का व्यवसाय शुरू करते हैं। छोटे दुकानदार, व्यापारी,

* ७६, फेस-३, अर्बन अस्टेट, दुग्गरी, लुधियाना– १४१०१३, फोन: ९७७९१-२४५००

उद्योगपति, स्टार्टअप के मालिक और हस्तशिल्प कारीगर इसी श्रेणी में आते हैं। ये लोग व्यापार करके या खुद का व्यवसाय शुरू करके अपनी जीविका अर्जित करते हैं।

नौकरी (सरकारी एवं निजी क्षेत्र) : शिक्षित और कुशल लोग सरकारी या निजी कंपनियों में नौकरी करके अपनी रोज़ी-रोटी कमाते हैं। सरकारी नौकरियाँ स्थायित्व और सुरक्षा प्रदान करती हैं, जबकि निजी क्षेत्र में अधिक मेहनत और प्रतिस्पर्धा होती है। शिक्षित लोगों के लिए सरकारी और निजी कंपनियों में रोजगार प्राप्त करना एक प्रमुख साधन बन गया है।

तकनीकी व डिजिटल क्षेत्र : आज का युग डिजिटल क्रांति का है। आधुनिक युग में ऑनलाइन नौकरियाँ, फ्रीलांसिंग, यूट्यूब, ब्लॉगिंग, ऐप डेवलपमेंट और डेटा साइंस जैसे नए करियर विकल्प भी रोजगार के नए अवसर प्रदान कर रहे हैं।

कला, खेल और मनोरंजन उद्योग : कई लोग संगीत, नृत्य, अभिनय, खेल और लेखन के माध्यम से भी आजीविका कमाते हैं। क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन आदि खेलों में करियर बनाने वाले खिलाड़ी भी लाखों-करोड़ों रुपये कमाते हैं।

किरत की महत्ता : काम कोई भी छोटा या बड़ा नहीं होता। हमें हर प्रकार के काम का सम्मान करना चाहिए। 'Dignity of Labour' (श्रम की गरिमा) किरत का अति महत्वपूर्ण पहलू है। किरत करने के लिए, किसी भी काम को छोटा या बड़ा समझकर उसे करने से संकोच नहीं करना चाहिए। हां, इतना ध्यान अवश्य देना चाहिए कि वह काम नैतिक, सामाजिक या कानूनी तौर पर गलत न हो। इसके साथ-साथ, काम के प्रकार के आधार पर, किसी काम करने वाले को छोटा या बड़ा नहीं समझना चाहिए।

महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि किरत में मेहनत व ईमानदारी का सुमेल होना अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा ऐसा धन जो बिना मेहनत व ईमानदारी से कमाया गया हो, पाप का भागी बनाता है। अगर हम मेहनत व ईमानदारी से कमाए धन का सदुपयोग करके, परिवार का पालन-पोषण करेंगे तथा उस धन के कुछ भाग को धर्मार्थ खर्च करेंगे तभी हम लाभ के पात्र बन पाएंगे अन्यथा हमें अपने कुकर्मों की सजा स्वयं भुगतनी पड़ेगी।

इस संदर्भ में हमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शोभायमान गुरबाणी के बहुत-से फरमान मिल जाते हैं। इनमें से कुछ चुनिंदा फरमान निम्नानुसार हैं :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ।। (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४१)

भावार्थ : श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि पराया हक मारकर खाना, मुसलमान के लिए सूअर खाने तथा हिंदू के लिए गाय खाने के समान है।

बहु परपंच करि पर धनु लिआवै।।
सुत दारा पहि आनि लुटावै।।१।।
मन मेरे भूले कपटु न कीजै।।
अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६५६)

भावार्थ : गुरु साहिब हमें समझाते हुए कहते हैं कि

हे मनुष्य! तू कई तरह के प्रपंच कर (छल-कपट से भरा कार्य कर), पराया धन आदि घर लेकर आता है और इस धन को अपनी पत्नी व अपने बच्चों (परिवार) पर लुटा देता है अर्थात् खर्च कर देता है। हे मनुष्य! तू अपने मन को समझा कि हे मेरे भूले हुए मन ! तू आजीविका कमाने के लिए किसी के साथ धोखा, छल-कपट व ठगी मत कर, क्योंकि अंत में तेरे कुकर्मों का लेखा-जोखा तेरे से ही लिया जायेगा।

सच्ची-सुच्ची किरत करने के लिए गुरबाणी हमें निम्नानुसार संदेश देती है :

खोटे वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २३)

भावार्थ : खोटा व्यापार करने से अर्थात् व्यापार में किसी के साथ धोखा या छल-कपट करने से या ठगी मारने से, मन व तन दोनों मलीन हो जाते हैं।

हकु हलालु बखोरहु खाणा ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०८४)

भावार्थ : हे मनुष्य! तू हक-हलाल की कमाई से अर्थात् मेहनत व ईमानदारी की कमाई से बना हुआ भोजन खाया कर।

घालि खाइ किछु हथहु देइ।।
नानक राहु पछाणहि सेइ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२४५)

भावार्थ : श्री गुरु नानक देव जी हमें समझाते हुए कहते हैं कि जो व्यक्ति मेहनत व ईमानदारी से अर्जित किए धन से बना हुआ भोजन खाता है तथा इस धन से ज़रूरतमंद लोगों की मदद भी करता है, वास्तव में उस व्यक्ति ने सत्य के मार्ग की पहचान कर ली है अर्थात् उस व्यक्ति को वास्तविक जीवन-मार्ग का ज्ञान हो गया है।

गुरु-घर के अनन्य सिक्ख भाई गुरदास जी पर सतिगुरु जी की विशेष कृपा थी। श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना के समय भाई गुरदास जी ने विशेष भूमिका निभाई थी। भाई गुरदास जी ने गुरबाणी के अलग-अलग सिद्धांतों को आसान भाषा में समझाने के लिए इतिहास की चुनिंदा घटनाओं को काव्य रूप में लिखा। भाई गुरदास जी द्वारा उच्चरित रचनाओं को 'गुरबाणी दी कुंजी' भी कहा जाता है।

सच्ची-सुच्ची किरत के सम्बन्ध में, भाई गुरदास जी अपनी 'वारों' में निम्नानुसार संदेश देते हैं :

किरति विरति करि धरम दी
हथहु दे कै भला मनावै। *(वार ६:१२)*

भावार्थ : भाई गुरदास जी कहते हैं कि गुरसिक्ख सच्ची-सुच्ची किरत करके धन कमाते हैं और उस धन में से ज़रूरतमंद लोगों की सहायता करके भला मनाते हैं।

निष्कर्ष : किरत करना न केवल जीवन की आवश्यकता है, बल्कि यह आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान का भी प्रतीक है। हर व्यक्ति को अपनी आजीविका कमाने के लिए मेहनत व ईमानदारी से परिश्रम करना चाहिए और अपने कौशल का निरंतर विकास करते रहना चाहिए, ताकि वह समय के साथ बदलती दुनिया में खुद को बरकरार रख सके।

नशे और नौजवानों की मानसिकता

–डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति*

नशों को जिस प्रकार बीमारी तथा नशा-मुक्ति केन्द्रों को इलाज-केंद्र तक सीमित कर देखा जा रहा है, यह एक प्रकार से नशे की समस्या को जड़ से समझने की कोशिश नहीं है। नशा, एक सामाजिक समस्या है, जिसके बीज हमारे सामाजिक ढांचे में विद्यमान हैं। यदि और बारीकी के साथ समझना हो तो यह सामाजिक-मनोवैज्ञानिक समस्या है।

मनोविज्ञान को साधारण शब्दों में समझना हो तो यह है मानव का अपना व्यवहार। वह क्या सोचता है, महसूस करता है और किस ढंग से कार्यशील होता नज़र आता है। विचारों और जज़बातों का प्रकटीकरण, मानव की मानसिकता को दरसाता है। नशों के सम्बन्ध में हम लोग अक्सर देखते हैं, जब माता-पिता अपने जवान बच्चों से अक्सर कहते हैं — "तू इतना बड़ा हो गया है, कोई तेरे मुँह में जबरदस्ती नशा डालता है! भला कौन ज़बरदस्ती कर सकता है तेरे साथ! और भी लोग हैं, मैं भी हूं! किसी की क्या हिम्मत जो मुझे नशा खिला दे! तू ही इस समस्या का ज़िम्मेदार है। तू खुद इस दलदल में डूबा हुआ है।"

नशा एक पेचीदा समस्या है। कैसे परिवार, सामाजिक चौगिर्दा व्यक्ति की मानसिकता, उसकी शख्सियत का निर्माण करता है। कैसे समाज उसकी मानसिकता को तोड़ता-मरोड़ता है और अस्त-व्यस्त करता है। समस्या को व्यक्ति की निजी जिंदगी के साथ जोड़ कर हम इस समस्या को सुलझाने की बजाय उलझा देते हैं और हमारा सारा ज़ोर नौजवान को डांटने, उस पर क्रोधित होने, गाली-गलौच करने, मारपीट करने या नशा-मुक्ति केंद्र में दाख़िल करवाने तक रह जाता है।

इस स्थिति का दूसरा पक्ष है नशा-मुक्ति केन्द्रों की कारगुज़ारी, जो कि नशेबाज की मानसिकता को संबोधित नहीं होती और केवल कुछ दिन गोलियाँ-टीकों के माध्यम से होती है तभी इसका कारगर प्रभाव देखने को नहीं मिलता। यह इलाज नशेबाज की शारीरिक कमजोरी को अवश्य कम कर देता है, मगर मानसिक बेचैनी, मन की ज़रूरत उसे फिर से

* *९७, गुरु नानक एवेन्यू, मजीठा रोड, श्री अमृतसर साहिब—१४३००१, फोन : ९८१५८-०८५०६*

उसी रास्ते पर ले जाती है।

बढ़िया, प्रभावशाली और लंबे समय तक बने रहने वाले प्रभाव वहीं पर देखे गए हैं, जहाँ नौजवान को नशा-मुक्ति केंद्र से वापस आने पर उसे मानसिक तौर पर सुखद माहौल मिलता है और जब उसकी मानसिक उलझन को समझा जाता है। यह भी देखने में आया है कि जहाँ परिवार और समाज के सदस्य समस्या को नशाखोर नौजवान के दोष या उसकी कमी के साथ न जोड़ कर, उसकी बेचैनी के साथ जोड़ कर देखते हैं तो उसे प्यार और सहजता के साथ, हमदर्दी व अपनेपन की भावना के साथ जोड़ते हैं, तो निष्कर्ष बढ़िया निकलते हैं।

इस प्रकार यह जहाँ नौजवान की उलझी मानसिकता के साथ जुड़ी समस्या है, वहाँ यह सामाजिक संस्थाओं, जैसे— माता-पिता, अध्यापक, हमारे राजसी व धार्मिक नेताओं की मनोवैज्ञानिक समझ के साथ भी संबंध रखती है। तभी इसे सामाजिक-मनोवैज्ञानिक तौर पर जानना व समझना ज़रूरी है। ये सामाजिक संस्थाएं ही अंतत: मानवीय मानसिकता को प्रभावित करती हैं। इस प्रकार कह सकते हैं कि समाज ही मानवीय मानसिकता का रचयिता है।

मानवीय मानसिकता, वैसे तो ज़िंदगी के सभी पड़ावों पर ही साथ होती है और रोज़मर्रा के घटनाक्रम से प्रभावित होती है, मगर ज़िंदगी का सबसे अहम पड़ाव जवानी है, जो हमें कई तरह की उम्मीद के साथ जोड़ता है कि इसने घर-परिवार, देश-समाज की बागडोर संभालनी है, इसलिए सबकी पूरी कोशिश रहती है कि इसे अपने ढंग-तरीके के साथ बनाया जाये या यूं कहें कि ढाला जाये। यह ठीक है कि हर परिवार और समाज का अपना स्वरूप होता है, जिसके अंतर्गत लोग अपनी आने वाली पीढ़ी को उसका नेतृत्व करता हुआ देखना चाहते हैं, परन्तु शरीर का एक प्राकृतिक विकास है, जिसकी अपनी एक ज़रूरत है और उसी मुताबिक उसकी माँग है, इसलिए यह ज़रूरी है कि घर में माता-पिता को और स्कूल में अध्यापकों को इस प्राकृतिक विकास के अंतर्गत हो रहे परिवर्तन के मद्देनज़र बच्चों-युवाओं के रूबरू होना चाहिए, जो कि अक्सर नहीं होता।

बच्चे का प्राकृतिक विकास और बेचैनी का आलम : बच्चा जब बोलने लगता है तब वह अपने आस-पास से अवगत होने लगता है। परिवार के सदस्यों को पहचानने लगता है और एक नाम, एक रिश्ता मिलता है— पिता, माँ, दीदी, भाई, दादू, मामू आदि और इसी तरह अन्य सामान-मेज़, कुर्सी, पंखा, कटोरी, चम्मच इत्यादि। इस तरह वो अपने ज्ञान का भंडार बढ़ाता है। इससे अगले पड़ाव पर उसे

एक अन्य शब्द मिलता है— मेरी माँ, मेरी मेज़, मेरा खिलौना आदि। यह ज्ञान का संसार उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण भी है। यह क्या है, वह क्या है, इसके जवाब में उसके माता-पिता उसे सिखाते भी हैं। बचपन के विकास के साथ उसके पास दो भाव आ जाते हैं— मैं और मेरा। यह मात्र आस-पास की जानकारी ही नहीं है, यह आस-पास के साथ जुड़ा लगाव भी है, जो बच्चों के हावभाव में साफ़ नज़र आता है।

उपरोक्त दूसरे पड़ाव पर पहुँचते हुए लगभग १३-१४ वर्ष की आयु में बच्चे में एक और प्राकृतिक गुण विकसित होता है और प्रकट होता है कि वह 'क्या' की जानकारी से आगे 'क्यों' के बारे में जानने का इच्छुक होता है। पहले पड़ाव पर आप जो कहो वह उसी प्रकार करता है। इस पड़ाव पर वह पूछता है कि मैं क्यों करूँ? इस प्रकार अब वह अपने आप से भी मुख़ातिब होता है और सवाल खड़ा करता है कि मैं कौन हूं? मैंने क्या करना है? बड़ा होकर क्या बनना है? इससे आगे समाज में विचरण करते हुए वह और भी अनेक सवालों के जवाब चाहता है। मैं काला क्यों हूं? मैं नाटा क्यों हूं? मैं इस स्कूल में क्यों पढ़ता हूं? मेरे पास बढ़िया कपड़े क्यों नहीं हैं? मेरा घर गंदे इलाके में क्यों है? स्कूल में बच्चे और अध्यापक मेरे साथ भेदभाव क्यों करते हैं? यह सूची जितनी मर्ज़ी लंबी की जा सकती है। दिक्कत है कि बच्चे की यह प्राकृतिक अवस्था है जब वह अपनी जिज्ञासा पूरी करना चाहता है, जबकि उसे रोका या मना किया जा रहा होता है और निरुत्साहित भी किया जाता है। पहले तो सवाल बेचैन करते हैं और फिर सवालों का जवाब न मिलना, इस बेचैनी को और बढ़ा देता है।

इस तरह के सवालों को लेकर, मानवीय विकास का यह पड़ाव नया नहीं है। यह प्राकृतिक रूप से मानव-अस्तित्व के साथ जुड़ा हुआ है और इसकी तीव्रता बढ़ती है सामाजिक परिवर्तन के साथ।

कोई कह सकता है कि इससे पहले नौजवानों का विकास बिना किसी बाधा या समस्या के गुज़र जाता था! यदि संक्षिप्त शब्दों में कहें तो परिवार बड़े थे, कार-विहार संयुक्त थे, विवाह जल्दी हो जाता था। लालसाओं के प्रति कह लो तो रोज़गार के लिए भाग-दौड़ नहीं थी। शिक्षा की उस तरह की अहमियत नहीं थी, जिस तरह की आज है। संचार के साधन बहुत ही सीमित थे। इस प्रकार आयु-परिवर्तन में समाज-परिवर्तन एक तूफ़ान पैदा करने का काम कर रहा है।

नौजवानों की मानसिक उलझन का आज का दृश्य : परिवार छोटे हो गए हैं। एक या दो बच्चे हैं। माता-पिता का सारा ध्यान बच्चों पर

है। उनका सारा दांव इन पर लगता है। यही भविष्य हैं और यही अंतिम सहारा हैं। बच्चों पर पहला ज़ोर पढ़ाई का है। हर हाल में नर्सरी से पूर्व ही विद्यालय का चयन और फिर शिक्षा। माता-पिता की सारी जमा-पूँजी बच्चों पर लग रही है। उन्हें बारी-बारी से कोई बड़ा आफिसर, बनने का ख्वाब दिखाकर, बड़े पद, बड़े पैकेज का स्वप्न दिखा कर सुबह जगाया जाता है। इस हालत को देखते हुए बड़े-बड़े, कॉर्पोरेट घरानों राजसी नेताओं ने 'शिक्षा के व्यापार' में पैर पसारे हैं। गली-गली कॉलेज हैं और शहर-शहर में यूनिवर्सिटीज़। सब जगह मनमर्ज़ी का खेल है। सरकार का कहीं भी कोई दख़ल नज़र नहीं आता। लाखों रुपए देकर दाख़िला मिलता है।

नौजवान शिक्षण-संस्थाओं की चमचमाती इमारतों की तस्वीरों में अपने चमकते हुए भविष्य को देखता हुआ पहुँचता है। पहले दिन ही उसे पता चलता है कि यहाँ पर तो पूरे अध्यापक भी नहीं हैं, यहाँ पर पुस्तकालय की कमी है या पुस्तकालय बस, नाम का है। यह शिक्षण-संस्थान कम और डिगरियाँ बाँटने की दुकान ज्यादा लगती है। नौजवान प्राय: सच बताकर अपने माता-पिता को परेशान नहीं करना चाहता। फिर वह ज्यादातर समय कक्षा की बजाय कैंटीन या दोस्तों के साथ इधर-उधर बैठ कर गुज़ारता है। उसकी मानसिकता में उलझनें पैदा होना शुरू हो जाती हैं।

इसी दौरान उसे पता चल जाता है कि लाखों रुपए का पाठ्यक्रम (कोर्स) करने के बाद रोज़गार नहीं है, अगर है तो वह कम वेतन का है या रोज़गार प्राप्त करने के लिए रिश्वत देने का नाम सुनकर वह ठगा-सा महसूस करता है। उसे बेरोज़गारों की भीड़ भी दिखाई देने लगती है।

हमें समझना चाहिए कि यह उम्र सपने देखने की है और सपने पूरे करने की भी। इसी उम्र में जब हम बच्चों को 'होश नहीं, जोश ही जोश है' के साथ संबोधित करते हैं तो हम भूल कर बैठते हैं कि होश भी जरूरी है। मनोविज्ञान का अध्ययन बताता है कि इस उम्र की दो ख़ामियाँ मुख्य हैं— नई सोच और कुछ कर दिखाने की चाह। यदि हम मानवीय विकास और इस दौरान हुई प्राप्तियों पर नज़र डालें तो बहुसंख्यक आविष्कार और प्राप्तियां इसी उम्र ने ही किये हैं। नई सोच तभी प्रफुल्लित होती है जब उसे ज़मीन पर कोई रूप देने का अवसर मिले, माहौल मिले। हम देखते हैं कि आज कहने को विकास की गति शिखरों पर है, जबकि नौजवानों में बेचैनी व असुरक्षा की भावना भी पूरी रफ्तार पकड़े हुए है। इस हालत के ज़िम्मेदार भी माता-पिता और अध्यापक ही हैं, जो हर समय नौजवानों को असुरक्षा का

एहसास करवाते रहते हैं। शिक्षा, वो भी रट्टानुमा और उसी पर आधारित इम्तिहान और कॉलजों या नौकरियों के लिए चयन। इसमें असुरक्षा माँ-बाप की अपनी भी है, जिन्हें अपने भविष्य की तथा लगाए गए पैसे की चिंता है कि बच्चा सेट नहीं हो रहा। यह चिंता भी वाजिब है। अंत में हासिल क्या होता है— बेचैन, परेशान नौजवान, जो कि इस उम्र की महत्त्वाकांक्षा में कुछ कर दिखाने की भावना को धुंधला होता देख कर नशे के अधीन होकर या ऐसी अन्य ग़ैर-रचनात्मिक सरगर्मियों में गलतान होने लगता है।

शिक्षा में भी समय नहीं गुज़र रहा। रोज़गार है नहीं या संतुष्टि वाला नहीं है। नशे के व्यापारी इस माहौल को देख रहे होते हैं और फिर वे इन नौजवानों में आ घुसते हैं। पहले स्वाद चखाते हैं। जवानी की उस भावना को उकसाते हैं— "करके देख! तजुर्बा करने में क्या हर्ज है? अब नहीं करेगा, फिर कब करेगा?" इस तरह यह चुन्नौती, ख़्वाबों की उधेड़बुन में नौजवान को कबूल करनी पड़ती है और वह फंस जाता है नशे के जाल में। फिर उसकी ज़रूरत उसे नशा बेचने के रास्ते पर भी ले जाती है और नशा बेचने वाला असली सौदागर अपने घर पर बैठा खुश हो रहा होता है अपने व्यवसाय को बढ़ता-फूलता देखकर।

समाज में किसी आदर्श, किसी प्रेरणास्त्रोत की कमी : प्रत्येक शख्स को एक प्रेरणास्त्रोत की ज़रूरत होती है। जैसा वह बनना चाहता है, जिनके पद-चिन्हों पर चल कर वह कुछ हासिल करना चाहता है, वे माता-पिता हो सकते हैं या अध्यापक या सामाजिक-धार्मिक नेता हो सकते हैं या इतिहास के बुलंद नायक भी। कोई भी शख्स, विशेषकर किशोर, नौजवान, जब अपने प्रति सचेत होते हैं तो वे समाज के ऐसे किरदारों से प्रभावित होते हैं। उन्हें वे प्रभावित करने वाले गुण हैं कि वह शख्सियत ईमानदार हो, मेहनती हो, बाँट कर खाने वाली हो, मददगार हो आदि। आज जब नौजवानों के साथ बात करें तो लगभग एक चौथाई नौजवान कहते हैं कि उनका कोई प्रेरणास्त्रोत नहीं है, माता-पिता भी नहीं। यह सूचक है कि समाज में धीरे-धीरे ऐसे किरदारों की संख्या कम रो रही है, जिनमें असली मानवीय गुण हों। यह कोई साधारण घटनाक्रम नहीं है, बड़ा ख़तरनाक माहौल है कि हमारे नौजवानों को अपने आस-पास कोई प्रेरणास्त्रोत नज़र नहीं आ रहा।

माता-पिता, अध्यापक और नौजवानों का व्यक्तित्व-निर्माण : नशों का प्रयोग करने के पक्ष से एक पहलू है कि नशा करने वाले नौजवान का व्यक्तित्व कमज़ोर होता है, जो

नशों की तरफ जल्दी झुक जाता है, जबकि उसके कुछ साथी इस तरह के हालात से बचे रहते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि व्यक्तित्व की एक अहम भूमिका है, लेकिन नौजवानों को इसका ज़िम्मेदार ठहराने की जगह, अपने आप को मुखातिब होने की आवश्यकता है कि समाज-परिवार में प्रेरणास्त्रोत नहीं हैं। माता-पिता और अध्यापकों के अपने किरदार ही कमज़ोर हैं। दूसरा, उन्हें नौजवानों की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक ज़रूरतों का भी पता नहीं है और एक पारंपरिक परवरिश के अंतर्गत माता-पिता डरावने दृश्य की भाँति हैं और अध्यापक डंडाधारी। क्या सज़ा ही एकमात्र ढंग है बच्चों को सही मार्ग पर लाने का? अध्ययन बताते हैं कि दोस्ती-नुमा संवाद ही इस समस्या से छुटकारा पाने का सबसे बढ़िया ढंग है, साथ ही खुल कर बात करने और सुनने का वातावरण, जो कि हमारी भारतीय परंपरा का हिस्सा नहीं बन सका है।

देश का राजसी माहौल : शिक्षा और रोज़गार की बात की है जो कि एक बढ़िया दिशा तथा रुझान पैदा करने वाले होते हैं और मानवीय मानसिकता को ताकत प्रदान करते हैं। ये काम सरकारों के होते हैं, राजनीतिक निर्णय के अंतर्गत होते हैं। राजनीतिक नेताओं ने देश के लोगों के विकास की योजनाएं बनानी होती हैं। हम देख सकते हैं कि नौजवानों को लेकर, देश या राज्यों में कोई ठोस योजना नहीं है कि कैसे इस समस्या से निजात पाना है।

मानसिकता किसी भी आयु के लिए एक चालक-शक्ति होती है। यदि मन के अंदर बढ़िया, प्रगतिशील, रचनात्मिक तरंगें हों तो ये कमाल कर सकती हैं और यदि मन में बेचैन-परेशान तरंगें हों तो नतीजा उदासी व निराशा के रूप में निकलता है।

गुरबाणी का कथन "मनि जीतै जगु जीतु" यहाँ बिल्कुल उपयुक्त होगा कि यदि हम अपने मन को, अपनी मानसिकता को और अपनी ज़िंदगी के परवाह को समझ लें, तो हर मैदान फ़तह पाने के लिए कुछ भी कठिन नहीं है। मन को जीतने की कला सीखनी पड़ती है। यह सामर्थ्य हमारे नौजवानों में है और वे बहुत कुछ सीख सकते हैं, मगर उन्हें सिखाने वाले कौन हैं? माता-पिता भी इस काबिल नहीं बन सके हैं, हमारे धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक नेताओं की तो बात ही छोड़ो। परिवर्तन, सुधार, नूतन समाज की रचना का कार्य घर-परिवार से शुरू किया जाए, तो न तो कोई किसी से उलाहना रहेगा और न ही कोई पश्चाताप।

खबरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए 1386 करोड़ 47 लाख रुपए का बजट जयकारों की गूँज में पास

श्री अमृतसर साहिब : २८ मार्च : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए 1386 करोड़ 47 लाख 80 हज़ार रुपए का बजट जयकारों की गूँज में पास किया गया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय सरदार तेजा सिंघ समुंद्री हाल में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की उपस्थिति में आयोजित बजट इजलास की अध्यक्षता एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने की, जबकि महासचिव स. शेर सिंघ मंडवाला ने बजट पेश किया। इजलास के दौरान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के अतिरिक्त मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी अमरजीत सिंघ तथा सिंघ साहिब ज्ञानी केवल सिंघ विशेष रूप से उपस्थित रहे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के इस बजट में पिछले साल की अपेक्षा 9.95 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। महासचिव स. शेर सिंघ मंडवाला ने बजट पेश करते हुए विभिन्न विभागों एवं अदारों से होने वाली आमदन के विवरण प्रस्तुत किये और भविष्य काल के लिए आरक्षित की गई राशि का खुलासा किया। उन्होंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा गत समय में किये गए पंथक, शैक्षणिक, धर्म-प्रचार तथा लोक-कल्याण के कार्यों का भी विवरण प्रस्तुत किया। स. मंडवाला के अनुसार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी के नेतृत्व में सिक्ख संस्था ने धर्म-प्रचार, विद्या के प्रचार-प्रसार, पंथक कार्यों तथा लोक-कल्याण जैसे अहम कार्य किये हैं और इस बार भी बजट में इन क्षेत्रों के लिए विशेष राशि का इंतज़ाम किया गया है।

बजट इजलास के बाद पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि महासचिव स. शेर सिंघ मंडवाला द्वारा पेश किया गया बजट संगत की भावनायों का प्रतिनिधित्व वाला है और इसमें संगत के लिए सुविधाओं का ख़ास ध्यान रखा गया है। इसके अंतर्गत नई सराय, स्वास्थ्य तथा शिक्षा सेवाओं में प्रभावशाली विस्तार और धर्म-प्रचार के क्षेत्र में नई दिशाएं शामिल कर बेहतर परिणाम हासिल करने का यत्न किया जायेगा। उन्होंने विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस वर्ष धर्म प्रचार कमेटी का बजट 110 करोड़ रुपए और गुरुद्वारा साहिबान का बजट 1062 करोड़ रुपए है। इसी तरह जनरल बोर्ड फंड, ट्रस्ट फंड, विद्या फंड, खेल, प्रिंटिंग प्रेस तथा और शैक्षिक संस्थाओं के लिए विशेष राशि का प्रबंध किया गया है। उन्होंने बताया कि पंथक-कल्याण के कार्यों के लिए 4 करोड़ 95 लाख रुपए, सिक्ख बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान करने के लिए 8 करोड़ 40 लाख रुपए, खेलों के लिए 3 करोड़ 9 लाख रुपए, प्राकृतिक आपदा राहत-कार्यों के लिए 1 करोड़ 50 लाख रुपए, गुरुद्वारों में स्थापित मुफ़्त डिसपेंसरियों के लिए 44 लाख रुपए आरक्षित रखे गए हैं। उन्होंने बताया कि प्रशासकीय और जुडिशियल सेवाओं के लिए सिक्ख नौजवानों की तैयारी करवाने के लिए चल रही 'निश्चय अकादमी'

के लिए 2 करोड़ 63 लाख रुपए, अमृत संचार हेतु नि:शुल्क ककार प्रदान करने के लिए 1 करोड़ 95 लाख रुपए आरक्षित किये गए हैं। इसी प्रकार धर्म प्रचार लहर को प्रचंड करने के लिए 1 करोड़ 14 लाख, बंदी सिंघों के केस के लिए 60 लाख रुपए, सिकलीगर सिक्खों के लिए 60 लाख रुपए, अमृतधारी विद्यार्थियों की फ़ीस के लिए 2 करोड़ 50 लाख रुपए, अमृतधारी लड़कियों को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान करने के लिए 2 करोड़ रुपए, मीरी-पीरी मेडिकल कॉलेज हरियाणा के लिए 8 करोड़ रुपए, श्री गुरु ग्रंथ साहिब विश्व यूनिवर्सिटी के लिए 8 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे।

एडवोकेट धामी ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के बजट का मुख्य स्रोत संगत की तरफ से भेंट की जाती राशि और दसवंध है। उन्होंने कहा कि पिछले दो-तीन सालों से बजट की अनुमानित राशि में वृद्धि दर्ज की जा रही है, जो खर्चों को आवश्यकतानुसार एवं नियमित करने का परिणाम है। उन्होंने वचनबद्धता प्रकट की कि सिक्ख संस्था के कार्य संगत की भावना के अनुसार जारी रखे जाएंगे और ख़ास कर संगत की सुविधाओं को प्राथमिकता दी जायेगी। उन्होंने विशेष तौर पर ज़िक्र करते हुए कहा कि जब सरकारें विद्या के प्रसार के लिए फेल साबित हो रही हैं तो ऐसे समय में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का समाज के इस क्षेत्र में योगदान अति महत्वपूर्ण वाला है, इसी लिए बजट में विद्या के प्रचार-प्रसार के लिए बड़ी राशि रखी गई है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने बजट इजलास के दौरान कुछ सदस्यों द्वारा किये गए शोरशराबे को दुर्भाग्यपूर्ण करार देते हुए कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हज़ूरी में ऐसा करना उचित नहीं है। एडवोकेट धामी ने कहा कि वे प्रत्येक्त सदस्य के विचारों का सम्मन करते हैं, मगर यह मर्यादा और नियमों के दायरे में रह कर होना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि तख़्त साहिबान के जत्थेदारों के बारे में चल रही चर्चा को उन्होंने ख़ुद एजंडे पर लेकर बात करनी चाही थी, परंतु कुछ सदस्यों ने उनकी बात सुननी मुनासिब न समझी और वे मर्यादा के विरुद्ध जाकर शोरगुल करते रहे। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि जत्थेदारों की नियुक्ति, अधिकार-क्षेत्र और सेवा-मुक्ति के बारे में नियम बनाने के लिए वे ख़ुद संजीदा हैं, इसी लिए इजलास में इससे सम्बन्धित सैद्धांतिक प्रवानगी दे दी गई है। जल्द ही इस बारे में सुझाव लिए जाएंगे और गठित की जाने वाली कमेटी के माध्यम से इन पर विचार कर एक नीति बनाई जायेगी। उन्होंने कहा कि यह पंथ का संजीदा मसला है, जिस पर वे प्रत्येक के साथ विचार करने को तैयार हैं। उन्होंने समूह सदस्यों से अपील की कि वे सहयोग करें और एक भरोसे के साथ इस मसले के हल की तरफ बढ़ें।

श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार की नियुक्ति और सेवा-मुक्ति से सम्बन्धित नियमावली बनाने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने पंथ से माँगे सुझाव

श्री अमृतसर साहिब : २९ मार्च : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार की योग्यता, नियुक्ति, कार्य-क्षेत्र, जिम्मेदारियां और सेवा-

मुक्ति से सम्बन्धित नियम निर्धारित करने के लिए सिक्ख पंथ की समूह जत्थेबंदियों— दमदमी टकसाल, निहंग सिंघ दलों, आलमी सिक्ख संस्थाओं, सिंघ सभाओं, दीवानों, सभा सोसायटियों और देश-विदेश में बसते विद्वानों व बुद्धिजीवियों को अपने सुझाव भेजने की अपील की है।

उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम की यह चिरकालीन माँग रही है कि श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार की पदवी के सम्मान और महत्व के मद्देनज़र सेवा-नियम तय किये जाएँ, जिसे लेकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जनरल इजलास में सैद्धांतिक प्रवानगी का प्रस्ताव पारित किया गया है। इस प्रस्ताव की भावना के अनुसार जत्थेदार की नियुक्ति, सेवाओं और सेवा-मुक्ति के बारे में कौम की समूची जत्थेबंदियों एवं संस्थायों के साथ-साथ सिक्ख बुद्धिजीवियों के विचार अति महत्वपूर्ण हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पास अपने सुझाव भेजे जाएँ, ताकि इन पर विचार कर सेवा-नियमों के लिए एक संयुक्त कौमी सहमति बनाई जा सके।

एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि सुझाव शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को दस्ती रूप में या आधिकारिक ईमेल info@sgpc.net एवं व्हट्सएप नंबर : 77101-36200 पर भेजे जा सकते हैं।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने पाकिस्तान हाई कमिशन के मुख्य कमिशनर साद अहमद वड़ैच को लिखा पत्र

श्री अमृतसर साहिब : १० अप्रैल : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने पाकिस्तान स्थित गुरुधामों के दर्शनार्थ जाने वाले सिक्ख श्रद्धालुओं को खुलदिली के साथ वीज़ा देने के लिए दिल्ली स्थित पाकिस्तान हाई कमिशन के मुख्य कमिशनर साद अहमद वड़ैच को पत्र लिख कर उनका धन्यवाद किया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान द्वारा लिखे पत्र में कहा गया है कि ख़ुशी की बात है कि खालसा सृजना दिवस (बैसाखी) के अवसर पर पाकिस्तान स्थित गुरुधामों के दर्शनार्थ जाने वाले श्रद्धालुओं की शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से भेजी गई १९४२ नाम वाली सूची के अनुसार सभी वीजा जारी किये गए हैं। इस सहयोग ने सिक्ख श्रद्धालुओं को अपने ऐतिहासिक और पवित्र गुरुधामों के दर्शन करने का अवसर प्रदान किया है। ऐसा फ़ैसला न केवल श्रद्धालुओं की धार्मिक भावनाओं का सम्मान करता है, बल्कि भारत और पाकिस्तान के बीच सांस्कृतिक एवं भाईचारक संबंधों को मज़बूत करने में भी अहम योगदान देता है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने मुख्य कमिशनर साद अहमद वड़ैच और उनकी टीम के इस सार्थक प्रयास की प्रशंसा करते हुए लिखा कि आपके द्वारा दिया गया सहयोग हमेशा याद रखा जायेगा। उन्होंने सिक्ख श्रद्धालुओं को बड़ी संख्या में वीजा देने और उचित प्रबंध करने के लिए पाकिस्तान सरकार का भी तहे दिल से धन्यवाद किया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी इसी तरह सहयोग जारी रहेगा, जिससे सिक्ख भाईचारे को अपनी विरासत के साथ जुड़ने और गुरुधामों के दर्शन करने का अवसर मिलता रहे।

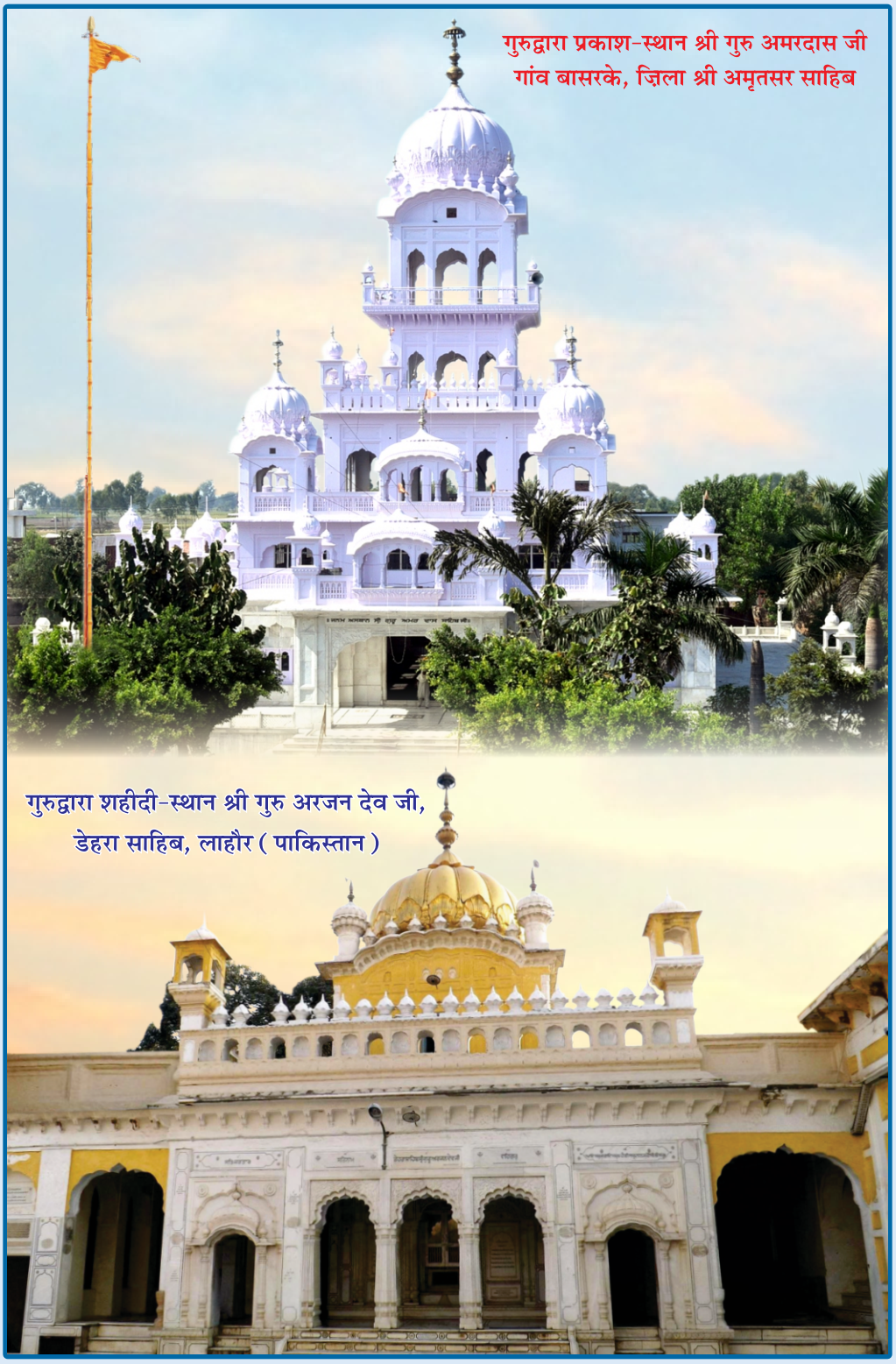

गुरुद्वारा प्रकाश-स्थान श्री गुरु अमरदास जी
गांव बासरके, ज़िला श्री अमृतसर साहिब

गुरुद्वारा शहीदी-स्थान श्री गुरु अरजन देव जी,
डेहरा साहिब, लाहौर (पाकिस्तान)

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

May 2025

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

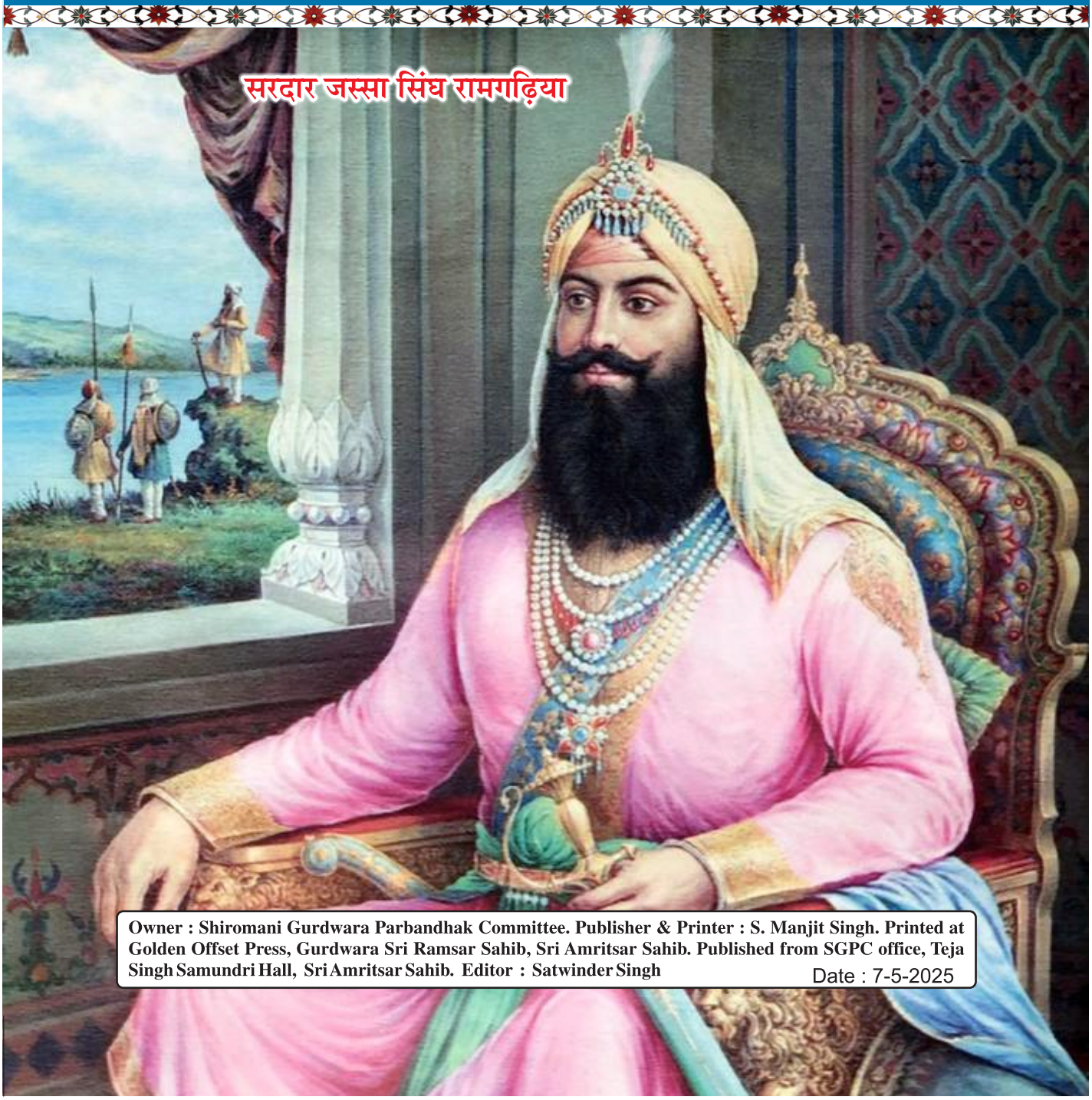

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh

Date : 7-5-2025